विद्यालय प्रशासन में अध्यापक की सहभागिता : एक तुलनात्मक अध्ययन

एम0 एड0 उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबन्ध

शोधकर्ता

साक्षी जैन

एम0 एड0 छात्रा शिक्षा शास्त्र संकाय

इन्टीग्रल विश्वविद्यालय , लखनऊ

शोध निर्देशिका

श्रीमती डॉ0 स्मिता श्रीवास्तव

सहायक प्रोफेसर

शिक्षा शास्त्र संकाय

इन्टीग्रल, विश्वविद्यालय, लखनऊ

शिक्षाशास्त्र संकाय 'इन्टीग्रल विश्वविद्यालय – लखनऊ'

वर्ष 2019 – 2020

घोषणा पत्र

शोधकर्ता घोषणा करती है कि इस लघुशोध प्रबन्ध से सम्बन्धित समस्त कार्य इन्टीग्रल विश्वविद्यालय में उसने स्वयं पूर्ण किया है। इसमें की गई गणनाओं, व्याख्याओं, संकलित प्रदत्तों तथा परिणामों के लिए शोधकर्ता सम्पूर्ण रूप से उत्तरदायी है।

दिनांक.....

शोधकर्ता

साक्षी जैन
एम0 एड0 छात्रा
शिक्षाशास्त्र संकाय
इन्टीग्रल विश्वविद्यालय,
लखनऊ

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रस्तुत अध्ययन जिसका शीर्षक '' विद्यालयी प्रशासन गतिविधियों में शिक्षक की सहभागिता : एक तुलनात्मक अध्ययन '' शोधकर्ती *साक्षी जैन* द्वारा मेरे निर्देशन व मार्गदर्शन में पूर्ण किया गया है। इसमें प्रयुक्त आंकडे प्रमाणिक हैं तथा यह अन्यत्र कही प्रस्तुत नहीं किया गया।

दिनांक.....

पर्यवेक्षक

डा0 स्मिता श्रीवास्तव
(सहायक प्रोफेसर)
शिक्षाशास्त्र संकाय
इन्टीग्रल विश्वविद्यालय ,
लखनऊ

आभार

सर्वप्रथम मैं इस लघु शोध प्रबन्ध की पूर्णता के लिए भगवान महावीर का तहे दिल से शुक्रिया करना चाहूंगी जिन्होने मुझे इस योग्य बनाया कि मैं इस कार्य को पूर्ण कर सकने में समर्थ हो सकूं।

मैं प्रस्तुत शोध की निर्देशिका तथा पथ प्रदर्शिका श्रीमती डा0 स्मिता श्रीवास्तव सहायक प्रोफेसर शिक्षा संकाय, इंट्रीगल विश्वविद्यालय के प्रति आभार व्यक्त करती हूं।

मैं प्रोफेसर एसोसिएट अखलाक अहमद जी का तहे दिल से आभार प्रकट करती हूं, शोध से सम्बंधित सूचनाओं एवं साहित्य संकलन में परिपूर्ण सुविधा प्राप्त करने तथा प्रबंध लेखन के क्रम में आपने मेरी अनेक समस्याओं का समाधान कर मेरा मार्ग दर्शन किया है।

मैं अपने परिवार माता – पिता बड़े भाई व तथा भाभी (दीप्ती जैन) को हृदय से धन्यवाद देती हूं। जिन्होने मुझे इस शोध प्रबंध को व्यवस्थित करने में यथा सम्भव योगदान दिया, जिनके सहयोग के बिना यह बिल्कुल ही असंभव सा था।

अतः मैं मो0 शादाब सिद्दीकी का भी धन्यवाद करना चाहूंगी जिन्होने मेरे शोध कार्य को लिखने तथा सही रूप में व्यवस्थित करने में अपना पूरा सहयोग दिया।

मुद्रण कार्य सावधानीपूर्वक किया गया है, परन्तु कुछ अशुद्धियों का रह जाना स्वाभाविक है, जिसके लिए मैं क्षमा चाहती हूं।

शोधकर्ती

साक्षी जैन

एम0एड0 छात्रा, षिक्षाषास्त्र संकाय

इन्टीग्रल विष्वविद्यालय, लखनऊ

विषयानुक्रमणिका

	पृष्ठ सं.
मुख्य पृष्ठ	1
घोषणा पत्र	2
प्रमाण पत्र	3
आभार	4
अध्याय	
प्रथम अध्याय	
प्रस्तावना	7–19
भूमिका	8–9
प्रशासन विभिन्न विद्धानों की दृष्टि में	9–10
शैक्षिक प्रशासन की विशेषताएं	12
शैक्षिक प्रशासन की प्रकृति	13–15
शैक्षिक प्रशासन एक कला के रूप में	16
शैक्षिक प्रशासन एक विज्ञान के रूप में	16
शोध समस्या कथन एवं मुख्य शब्दावली	17
शोध का उद्देश्य	17
शोध की परिकल्पना	18
शोध की आवश्यकता	18
शोध का सीमांकन	19
द्वितीय अध्याय	
सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण	20–25
सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषा	21–22
सम्बन्धित साहित्य एवं अनुसंधान	23
सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से लाभ	24
प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण	24–25
तृतीय अध्याय	
अनुसंधान का अभिकल्प	26–44
अनुसंधान का अर्थ एवं परिभाषा	27–29
शैक्षिक अनुसंधान का अर्थ एवं परिभाषा	30
अध्ययन विधि	30–36

जनसंख्या 36
न्यादर्ष 36
न्यादर्ष चयनविधि 37–39
प्रयुक्त उपकरण 39–44

चतुर्थ अध्याय

प्रवत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या 46–60
आंकडो का संकलन 46
लिंग के अनुसार न्यादर्ष का वितरण 47–50
विषय वर्ग के अनुसार न्यादर्ष का वितरण 50–53
बोर्ड के अनुसार न्यादर्ष का वितरण 54–57
स्नातक व स्नात्कोत्तर के अनुसार न्यादर्ष का वितरण 57–60

पंचम अध्याय

अध्ययन के परिणाम, शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव 61–64
निष्कर्ष 62
अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ 63
भावी अध्ययन के लिए सुझाव 64

सन्दर्भग्रंथ सूची 64–65

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

- भूमिका
- प्रशासन विभिन्न विद्धानों की दृष्टि में
- शैक्षिक प्रशासन की विशेषताएं
- शैक्षिक प्रशासन की प्रकृति
- शैक्षिक प्रशासन एक कला के रूप में
- शैक्षिक प्रशासन एक विज्ञान के रूप में
- शोध समस्या कथन
- शोध का उद्देश्य
- शोध की परिकल्पना
- शोध की सीमांकन

शिक्षा प्रशासन व्यवस्था अपने आप में एक विज्ञान है । इसके प्रषासन के अन्तर्गत वे सभी स्तर के लोग आते हैं जो किसी शैक्षिक संस्था को सुचारू रूप से चलाने में उसको कार्य करने देने में उसकी नीतियों तथा निर्देशों को सही दिशा रूप प्रदान करने में सहायक होते हैं ।

भारत जो कि विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है इसमें शिक्षा प्रशासन का इतिहास विधिवत रूप से सन् 1775 ई0 से प्रारम्भ होता है। पराधीन भारत में विदेशी कम्पनी शासन ने तीन स्कूल खोले थे और इनकी सहायता के लिए 1,00,000 रू. भी स्वीकृत किये परन्तु उनके द्वारा दी गयी इस धन राशि को एक लम्बे समय लगभग 20 वर्षो तक किसी भी तरह के प्रयोग में नही लाया जा सका इसका मुख्य कारण किसी सद्वठ नीति तथा प्रषासन का अभाव था। कालान्तर में सन् 1835 ई0 में लार्ड मैकाले ने षिक्षा नीति को निर्धारण किया और सन् 1854 ई0 में सर चार्ल्स वुड ने सहायता प्रणाली को लागू किया । इस प्रकार भारत में षिक्षा विभाग Directorate of Public Instruction **की स्थापना हुई ।**

भारत वर्ष में सन् 1921 ई0 में भारत में मृध शासन प्रणाली की स्थापना के कारण विधान सभाओं तथा षिक्षा – मंत्रालय का जन्म हुआ परन्तु इस समय में भारत के मंत्रियों के उपर कार्य का दायित्व तो अधिक था परन्तु उन पदों पर आसीन लोगों को षिक्षा की किसी भी व्यवस्था के संगठन को संचालित करने के लिए निर्णय लेने का अधिकार नहीं था ।

इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए सन् 1929 में हर्टाग कमेटी ने षिक्षा सलाहकर परिषद (Educational Advisory Council) बनाने की सिफारिष की जो सन् 1935 में लागू हुई। प्रषासन व्यवस्था तथा षिक्षा नीतियों को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए सन् 1944 में सार्जेन्ट कमीषन ने राष्ट्र विकास को षिक्षा का लक्ष्य निर्धरित किया और प्रषासन सम्बन्धी मामलों में अधिक उदारता अपनाने की सिफारिष की। इसी प्रकार सन 1948 में पारित हुऐ विष्वविद्यालय षिक्षा आयोग University Education Council. नें भी उच्च षिक्षा के प्रषासनिक सुधार पर अधिक बल दिया ।

माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार ''

शिक्षा पुननिर्माण में (किसी भी योजना में) प्रषासनिक क्षेत्र का विषेष

महत्व है क्योंकि यह तंत्र विभिन्न षिक्षण संस्थाओं के विकास के लिए उत्तरदायी है, अतः षिक्षा – प्रषासन में सुधार किये बिना हम षिक्षा के लक्ष्यो को प्राप्त नहीं कर सकते ।

शैक्षिक प्रषासन क्या है ? इस प्रष्न के उत्तर के लिये हमें सर्वप्रथम प्रषासन को भली प्रकार से समझना होगा।

(विद्यालयी) षैक्षिक प्रषासन का सीधा सम्बन्ध षिक्षा के साथ होता है अन्य सभी संगठनों में भी प्रषासन होता है परन्तु विद्यालय प्रषासन अन्य सभी संगठनो के प्रषासन से भिन्नता रखता है । उपर्युक्त विवरण को हम निम्न उदाहरण के माध्यम से समझ सकते हैं कि किस प्रकार विद्यालय प्रषासन अन्य संगठनों के प्रषासन प्रबंधन से भिन्न है, यदि हम औद्योगिक प्रषासन की बात करें तो उसका प्रमुख लक्ष्य अधिकतम उत्पादन होता है और जो प्रषासक कम लागत में अधिक उत्पादन करता है उसे ही अच्छा प्रषासक माना जाता है औद्योगिक प्रषासन का कच्चा माल निर्जीव पदार्थ होता है जिसे काट छांट कर अपनी आवष्यकता अनुरूप ढ़ाला जा सकता है परन्तु शैक्षिक प्रषासक का कार्य सरल नहीं होता क्योंकि शैक्षिक प्रषासन में कच्चे माल के रूप में हमें सजीव बालक मिलते हैं जिसको निष्चित व सही आकार व रूप प्रदान करने के लिए धैर्य, दूरदृष्टि एवं लगन की आवष्यकता होती है।

बालक वह सजीव पदार्थ हैं जिसका व्यवहार जटिल होता है तथा जिसे आसानी से किसी भी रूप में नहीं ढ़ाला जा सकता उसके लिए कड़ी मेहनत, धैर्य व लगन की आवष्यकता होती है। शैक्षिक प्रषासन का प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में कम लोगों पर भी पड़ता है जो देष के भावी नागरिक हैं क्योंकि किसी भी व्यक्ति के जीवन में षिक्षा सिर्फ उसे षिक्षा प्रदान करने का ही कार्य नही करती बल्कि उसके चरित्र निर्माण के व्यक्तित्व को भी निखारने का कार्य भी शिक्षा करती है इसी लिए षिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक प्रषासन अत्यंत सुदृढ़, मजबूत व राष्ट्रहित में होना चाहिए। जिससे राष्ट्र को इसके दूरगामी परिणाम प्राप्त होंगे। शैक्षिक प्रषासन की प्रक्रिया के द्वारा क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों का प्रषासन में सांमजस्य स्थापित किया जाता है और उपलब्ध सामग्री का इस प्रकार उपयोग किया जाता है कि वह मानवीय गुणों के विकास में प्रभावषाली ढ़ग से योगदान दे सकें।

शैक्षिक प्रशासन को हम निम्न परिभाषाओं से और भी बेहतर तरीके से समझा जा सकता है ।

एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशनल रिसर्च के अनुसार

'' शैक्षिक प्रषासन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा सम्बन्धित व्यक्तियों के प्रयासों का एकीकरण तथा उचित सामग्री का उपयोग इस प्रकार किया जाता है कि जिससे मानवीय गुणों का समुचित विकास हो सके।''

एस0 एन0 मुखर्जी

''अन्य प्रषासन की भांति प्रषासन पांच तत्वों– नियोजन, संगठन, आदेष समन्वय तथा नियंत्रक की एक प्रक्रिया है''

Henry Feayal

लुथर गुलिक के अनुसार

आपने शैक्षिक प्रषासन प्रक्रिया का विषलेषण व्यापक अर्थ में पोस्डकार्विग फार्मूले द्वारा प्रस्तुत की है।

पोस्टकार्विग की संरचना

1)	P	-	Planning	*	नियोजन बनाना
2)	O	-	Organization	*	निर्देष देना
3)	S	-	Staffing	*	नियुक्त करना
4)	D	-	Directing	*	निर्देष देना
5)	Co	-	Co-Ordinating	*	समन्वय करना
6)	R	-	Reporting	*	आलेखन तैयार करना
7)	Bing	-	Budgeting	*	बजट बनाना

" Educational Administration contains much that we mean by the word government and is closely related in content in such words as superintendence super vision planning oversight direction. Organization control guidance and regulation. "

J. B. Sears

" Administration is the capacity to co-ordinate ma'kqU; and often conflicting social energies in a

single Organism jointly that they shall operate as an unity ” - **Brook Adams**

शैक्षिक प्रषासन के अन्तर्गत षिक्षा के कार्य यथा बच्चों युवा और कभी – कभी प्रौढ़ो की षिक्षा व्यवस्था करना एवं उनके व्यक्तित्व का उचित निर्माण करना आता है।

शैक्षिक प्रषासन का सम्बन्ध मुख्यतः षिक्षा से ही होता है इसलिए षिक्षा के क्षेत्र में व्यवस्था जिस ढ़ांचे या तंत्र को खड़ा करता है, शैक्षिक प्रषासन उसे कार्यान्वित करने में सहायक होता है जिससे शैक्षिक लक्ष्यों एवं उद्देष्यों की अधिकाधिक प्राप्ति सम्भव होती है ।

शैक्षिक प्रशासन में मुख्यरूप स दो पक्षों पे बल दिया–

1. भौतिक संसाधनों के समुचित संगठन पर
2. मानवीय संसाधनों के प्रभावी ढंग से संगठन पर

यदि हम शैक्षिक प्रषासन की आधुनिक परिभाषा को देखे तों हमें पढ़ने मिलता है कि पूर्व में यह धारणा प्रचलित थी कि औद्योगिक, व्यवसायिक एवं जन प्रषासन के अनुभवों एवं सिद्धांतों में ही रूपांतरण षिक्षा प्रषासन में हुआ है परन्तु अब यह धारणा धीरे–धीरे बषुन्यी रही है । अब यह समझा जाता है कि प्रत्येक जनसमस्या जिसे समाज अनुभव करता है, प्रषासन की परिधि में आ जाती है ।

वर्तमान अवधारणा के अनुसार शैक्षिक प्रषासन को ऐसी प्रक्रिया माना जाता है जिसके अन्तर्गत षिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए नियोजित व्यक्ति 'प्रषासक' सुव्यवस्थित रूप से उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग करते हुए सहयोगपूर्वक कार्य करता है । उस प्रक्रिया में व्यक्ति एवं संगठन दोनों का समन्वित विकास सन्निहित रहता है।

'' अमेरिकन विद्यालय प्रषासक संगठन ने भी प्रषासन को निम्नलिखित ढंग से परिभाषित किया।''

'' यह एक ऐसी समग्र प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक साधनों का उपयोग संगठन के उद्देष्यों को प्रभावषाली ढंग से पूरा करने के लिए किया जाता है।''

शैक्षिक प्रशासन व्यवस्था में विद्यालय के अध्यापकों की भूमिका : किसी भी विद्यालय को चलाने में वहां कार्य कर रहें लोगो की भूमिका मुख्य होती है ।

शैक्षिक प्रशासन की विशेषताएं

1. **शैक्षिक प्रशासन एक मानवीय प्रकिया** – शैक्षिक प्रषासन राजनीतिक, दार्षनिक, मनोवैज्ञानिक आदि परिस्थितियों से प्रभावित एक मानवीय प्रक्रिया है अतः यह तथ्य सत्य है कि शैक्षिक प्रषासन के स्वरूप की रचना उसके मानवीय तत्वों द्वारा होती है जिसमें मौलिक तत्वों का समावेष उन्हीं के अनुरूप किया जाता है।
2. **शैक्षिक प्रशासन एक समन्वित प्रकिया है** – विचारकों का मानना है कि शैक्षिक प्रषासन एक समन्वय प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में नियोजन, संगठन, संचालन, समन्वय, नियंत्रण, मूल्यांकन आदि सभी पद एक समन्वित रूप से कार्य करते हैं।
3. **शैक्षिक प्रशासन का स्वरूप सदैव गतिशील होता है** – यह सर्वविदित है कि किसी राष्ट्र के शैक्षिक प्रषासन के स्वरूप की संरचना उस राष्ट्र के राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक आधार पर की जाती है।

   किसी राष्ट्र की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में परिवर्तन होने से शैक्षिक प्रषासन की संरचना में भी परिवर्तन होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि शैक्षिक प्रषासन का स्वरूप सदैव गतिषील होता है।
4. **शैक्षिक प्रशासन का स्वरूप केन्द्रीकरण व विकेन्द्रीकरण दो रूपों में होता है** – यह तथ्य सर्वविदित है कि शैक्षिक प्रषासन का स्वरूप केन्द्रीकरण व विकेन्द्रीकरण दोनो रूपों में पाया जाता है, केन्द्रीकरण शैक्षिक प्रषासन की प्रकृति फ्रांस में पाई जाती है जबकि विकेन्द्रीकरण शैक्षिक प्रषासन की प्रकृति अमेरिका में पाई जाती है।
5. **शैक्षिक प्रशासन की प्रकृति कार्यशील एवं नियंत्रित होती है** – शैक्षिक प्रषासन प्रकृति यांत्रिक तथा स्वचलित न होकर कार्यषील एवं नियंत्रित होती है।
6. **शैक्षिक प्रशासन की प्रकिया व्यवहारिकता एवं उपयोगिता पर आधारित होती है** – प्रक्रिया जो भी हो वह व्यवहारिकता पर ही आधारित होनी चाहिए और विद्यालय का पूरा कार्य सैद्धांतिक न

होकर व्यवहारिक होना चाहिए। विद्यालय के उद्देष्य, नीतिया, कार्य, नियम आदि सामाजिक एवं मानवीय परिस्थितयों के अनुरूप होना चाहिए, जिससे ये सभी प्रक्रियाएं समाज व व्यक्ति दोनों के लिए उपयोगी हो सकें।

शैक्षिक प्रशासन की प्रकृति का लक्ष्य

विद्यालय की कार्यशैली में सुधार लाना है – षैक्षिक प्रषासन द्वारा विद्यालय की कार्यषैली में सुधार लाया जाता है ताकि के अभिन्न अंग षिक्षक छात्र एवं अन्य सम्बन्ध के कार्यकर्ताओं के कार्यो में सुधार लाया जा सके इसके साथ ही विद्यालय की नीतियों उद्देष्यों साज–सज्जा, रख–रखाव, पठन–पाठन, मूल्यांकन आदि कार्यों में सुधार किया जाता है ।

शैक्षिक प्रशासन द्वारा नीति एवं कार्यकम निर्धारण में सभी अध्यापकों का सहयोग किया जाता है।

शैक्षिक प्रषासन द्वारा ऐसी नीतियों का व इस प्रकार के कार्यक्रमों का निर्धारण किया जाता है। जिसमें वह अपने कार्यरत अध्यापकों का परस्पर सहयोग ले सकें । जिससे प्रषासन में एक लोकतांत्रिक कार्य प्रणाली को विकसित कर अपनाया जा सकें ।

लोकतंत्रीय कार्य व्यवस्था के कारण षिक्षा व्यवस्था और षिक्षण कार्य दोनों को जीवन उपयोगी तथा उन कौषलों से परिपूर्ण करने का प्रयास किया जाता है।

शैक्षिक प्रशासन द्वारा शैक्षिक कार्यकर्ताओं व्यवसायिक विकास किया जाता है –

शैक्षिक प्रषासन द्वारा शैक्षिक प्रकिया को और अधिक मजबूत बनाने के लिए व उन्नतषील बनाया जाता है यह तभी सम्भव है जब कि शैक्षिक कार्यकर्ताओं का व्यवसायिक विकास किया जाए। अतः षिक्षा प्रषासन के द्वारा षिक्षा से सम्बधित सभी लोगों की कार्य में दक्षता व कुषलता में वृद्धि करते हैं।

इसके साथ ही इन्हे व्यवसायिक सभी सुविधाएं प्रदान करना तथा उनका उचित प्रयोग करना आदि एक प्रमुख उद्देष्य माना जाता है ।

शैक्षिक प्रशासन मानवीय एवं भौतिक संसाधनों का प्रयोग संगठन के उद्देश्यों को प्रभावशाली ढंग से पूरा करने के लिए करता है–

उपर्युक्त विषेषताओं को देखते हुए यह स्पष्टता के साथ कहा व देखा जा सकता है कि शैक्षिक प्रषासन मूलतः मानवीय एवं भौतिक संषाधनों के नियोजन पर ही पूरी तरह से ही निर्भर होता है शैक्षिक प्रषासन उतना ही सुदृढ़ माना जाता है जितना वह मानवीय एवं भौतिक संषाधनों का नियोजन इस प्रकार से करें कि शैक्षिक संगठन के उद्देष्यों को प्रभावषाली ढंग से प्राप्त किया जा सके ।

शैक्षिक प्रशासन के उद्देश्य –

शैक्षिक प्रषासन किसी भी व्यक्ति के प्रारंभिक जीवन का एक सही दिषा निर्देष उसके जीवन को एक सही उद्देष्य व लक्ष्य आदि को देने तथा उन्हे प्राप्त करने में अत्यंत सहायक होता है या यूं कहें कि बिना षिक्षा ग्रहण के उसका जीवन दिषाहीन वह अंधकार मय होने से बचाता है इसी क्रम में **एन.सी.ई.आर.टी.** ने इनके उद्देष्यों का स्पष्ट करते हुए कहा है कि उद्देष्य वह बिन्दु है जिसकी दिषा में कार्य करते हैं अथवा वह व्यवस्थित परिवर्तन है जिसे हम क्रिया के द्वारा प्राप्त करते हैं पाउस और क्रिया करते हैं।

इस प्रकार उद्देष्य के अर्न्तगत तीन तथ्यों पर बल दिया जाता है। –

1. दिषा – Direction
2. व्यवस्थित परिवर्तन – Systematic Change
3. क्रिया – Activity

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि उद्देष्य व्यावहारिक एवं कार्यपरक होते हैं ।

विद्वानों के अनुसार भी शैक्षिक प्रषासन के भिन्न–भिन्न उद्देष्य हैं।

अमेरिकन शिक्षाशास्त्री – शैक्षिक प्रषासन के निम्नलिखित उद्देष्य मानते हैं।

1. षिक्षा के उद्देष्यों के सम्बन्ध में सहमति प्राप्त करना है।
2. व्यवस्थित रूप से षिक्षा देने के लिए अध्यापकों अन्य सम्बंधित व्यक्तियों शैक्षिक उपकरणों और विद्यालय के निर्माण कार्य हेतु वित्त कि

व्यवस्था करना है ।

3. अध्यापकों एवं अन्य सम्बंधित व्यक्तियों की भर्ती की व्यवस्था करना है ।

4. विभिन्न व्यक्तियों के कार्यों में सांमजस्य स्थापित करना और उनमें आपसी सहयोग को बढावा देना है।

5. योजनाओं, नीतियों एवं व्यक्तियों के कार्यों का समय–समय पर मूल्यांकन करना है।

डा0 एस0 एन0 मुखर्जी – षिक्षा प्रषासन का उद्देष्य मानवीय सम्बंधो की स्थापना करना है जिससे कि विभिन्न प्रकृति के लोग आपस में मिलकर समुचित रूप से कार्य कर सकें।

अन्य विद्वानों की दृष्टि में –

1. प्रत्येक विद्यार्थी प्रत्येक अध्यापकों से षिक्षा प्राप्त करें।

2. षिक्षा पर खर्च किया जाना ऐसा हो जिससे राज्य आसानी से वहन कर सके।

3. कक्षा का वातावरण ऐसा हो या अध्यापकों के द्वारा ऐसे निर्मित किया जाये कि विद्यार्थी अधिक से अधिक सीख ले।

शैक्षिक प्रशासन की प्रकृति –

षैक्षिक प्रषासन के अन्तर्गत षिक्षा के कार्य तथा बालकों 'जोकि विद्यार्थी हैं' युवक जो समाज में जाने को तैयार हैं और कभी कभी प्रौढ़ों 'जो किन्ही कारणो वष अषिक्षित हैं इन तीनों के आर्थिक निर्माण की व्यवस्था करना आता है। इसलिए
षिक्षा के क्षेत्र में व्यवस्था जिस ढ़ांचे या तंत्र को खड़ा करता है, शैक्षिक प्रषासन उसे कार्यान्वित करने में सहायक होता है जिससे शैक्षिक लक्ष्यों एवं उद्देष्यों की अधिकाधिक प्रप्ति सम्भव होती है।

शैक्षिक प्रषासन को मुख्यतः दो भागों में बांट कर देखा और समझा जा सकता है –

1. भौतिक संसाधनों के समुचित संगठन पर

2. मानवीय संसाधनों के प्रभावी ढ़ंग के संगठन पर

षिक्षा प्रषासन का लक्ष्य भी उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों के आधार पर षिक्षा के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना होता है । इस सन्दर्भ में यह स्पष्ट है कि मानवीय सम्बन्धों में इतनी सटीक भविष्यवाणी

नही की जा सकती है जितनी सटीक भौतिक संसाधनों के सम्बंध में।

अब हम भौतिक व मानवीय संसाधनों के अन्तर्गत कौन कौन से वस्तुएं आती हैं इनका क्रमवार अध्यन करेगें।

भौतिक साधनों में आने वाली वस्तुओं के नाम निम्न प्रकार हैं।–

भवन उपकरण, खेल का मैदान, प्रयोगषालाएं, लाइब्रेरी, धन आदि आते हैं और ठीक उसी प्रकार जब दृष्टि मानवीय संसाधनों में डाले तो उसमें बालक, षिक्षक, कर्मचारीगण, व्यवस्थापक, अभिभावक, षिक्षा तथा स्थानीय समुदाय आदि के व्यक्ति आते हैं।

हमें इन भौतिक एवं मानवीय संसाधनों के शैक्षिक लक्ष्यों का अधिकाधिक प्राप्त करने के लिए इस प्रकार नियोजित तथा संयोजित करना पड़ता है जिससे शत प्रतिशत छात्रों के लिए व संस्था के लिए निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति करने में सहायक बन सके।

प्रश्न पर पहुंचने से पहले हमें प्रषासन की प्रकृति का ज्ञान होना अत्यन्त आवष्यक है। प्रषासन को लेकर लोगों के मन में यह सवाल बहुत ही लाज़मी सा है कि ये क्या है ? क्या प्रषासन एक कला है ? या क्या प्रषासन एक विज्ञान है ?

इन दोनो ही तथ्यों का पूर्णरूप से स्पष्ट होना अत्यन्त आवष्यक है।

प्रशासन एक कला के रूप में –

कुछ विषेष वर्ग के लोग प्रषासन को एक कला की दृष्टि से दृष्टिगोचर करते हैं क्योंकि इस प्रकार की विचारधारा के लोगों का यह मानना होता है कि प्रषासक बनने के लिए कुछ गुणों की आवष्यकता होती है जोकि जन्मजाति होती है तथा जिसे अर्जित नहीं किया जा सकता तथा इसी विचारधारा के कुछ ऐसे भी लोग हैं जो इसे परिस्थिति जन्म मानते हैं वो मानतें हैं कि लोगों को उनकी परिस्थितियां ही प्रषासन के रूप में संसार में समझ लाती है।

परन्तु आज अनेक विद्वान आधुनिक प्रषासन क्षेत्र के विकास और जटिलताओं के बढ़ने के कारण यह मानने लगें हैं कि एक सफल प्रषासक को जन्मजाति के अतिरिक्त भी बहुत कुछ सीखना होता है ।

प्रशासन एक विज्ञान है –

इस विचारधारा के अनुयायियों का मानना है कि प्रषासनिक समस्याओं को समझाने के लिए प्रषासनिक सिद्धांतो का प्रयोग किया जाना आवष्यक है यह प्रषासन को एक प्रक्रिया मानते हैं इनका मानना है कि प्रषासनिक नियमों पर चलकर प्रषासन को सुचारू रूप से बनाया जा

सकता है।

उपर्युक्त तत्वों से यह विदित होता है कि प्रषासन कला और विज्ञान दोनो का समन्वित रूप है।

विषय –

विद्यालयी प्रषासन गतिविधियों में षिक्षक की सहभागिता : एक तुल्नात्मक अध्ययन ।

शोध की आवश्यकता –

विद्यालय प्रबंधन में अध्यापक की सहभागिता का पता लगाना।

1. विद्यार्थियों की वृद्धि के विकास में षिक्षकों की सहभागिता का पता लगाना।
2. विद्यालय षिक्षकों के भिन्न भिन्न प्रतिभाओं का पता लगाना।
3. विद्यालय के उच्च स्तरीय प्रषासन व प्रबंधन को जानना जिससे विद्यार्थियों को अधिकतम लाभ पहुंचाया जा सके।
4. षिक्षा प्रणाली को विष्व स्तरीय बनाने में सहायता करना।
5. षिक्षकों के प्रबंधन व प्रषासन में उस योगदान को जानना जो विद्यार्थी के विकास में सहायता हो सके।

मुख्य शब्दावली –

1. **विद्यालयी प्रशासन –** विद्यालय प्रषासन एक चेतना पूर्ण ध्येय की प्राप्ति के लिये किया जाना वाला नियोजित कार्य है ।
   विद्यालय को सुचारू रूप से चलाने तथा सभी व्यवस्थाओं को व्यवस्थित ढंग से चलाने के लिए किये जाने वाले कार्य को प्रषासन कहते हैं।
2. **सहभागिता –** व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से चलाने के लिए अध्यापकों का आपसी सहयोग।
3. **तुल्नात्मक अध्ययन –** दो चरों या माध्यमों के मध्य तुलना करना अर्थात दोनों में कौन बेहतर है इसका पता लगाना।
4. **माध्यमिक स्कूल –** कक्षा 6 से कक्षा 8 तक विद्यालयों को माध्यमिक विद्यालय कहते हैं ।

उद्देश्य –

किसी शोध को करने का कोई न कोई उद्देष्य अवष्य होता है प्रस्तुत शोध को करने के निम्न उद्देष्य हैं।

1. यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यालय प्रषासन में अध्यापकों का लिंग के आधार पर योजना बनाने संगठन करने लोगों से संचार व्यवस्थाओं पे नियंत्रण रखने पे तथा मूल्यांकन में अन्तर का पता लगाना।
2. यू0 पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यालय प्रषासन में अध्यापकों का विषयों के आधार पर योजना बनाने, कार्य को संगठित करने, संचार में, व्यवस्थाओं पर नियंत्रण तथा मूल्यांकन करने में योगदान का पता लगाना।
3. यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड, के अध्यापकों का विद्यालयी प्रषासन में बोर्ड के आधार पर योजना बनाने, कार्य को संगठित करने, संचार में, व्यवस्थाओं में नियंत्रण तथा मूल्यांकन करने में योगदान का पता लगाना।
4. यू0पी0 तथा सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के अध्यापकों का उनकी शैक्षिक योग्यता के आधार पर विद्यालय प्रषासन में योगदान का पता लगाना।

परिकल्पना – शून्य परिकल्पना का प्रयोग किया गया है ।

1. लिंग के आधार पर यू0पी0 तथा सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के अध्यापकों के प्रषासनिक योगदान (योजना बनाने, संगठन बनाने, संचार माध्यमों, व्यवस्थाओं पर नियंत्रण तथा मूल्यांकन) में कोई सार्थक अंतर नही है।
2. विषय वर्ग के आधार पर यू0पी0 तथा सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के अध्यापकों के प्रषासनिक योगदान (योजना बनाने, संगठन बनाने, संचार माध्यमों, व्यवस्थाओं पे नियंत्रण तथा मूल्यांकन) में कोई सार्थक अंतर नही है।
3. यू0पी0 तथा सी0बी0एस0सी0 बोर्ड के आधार पे यू0पी0 तथा सी0 बी0 एस0 सी0 बोर्ड के अध्यापकों के प्रषासनिक योगदान (योजना बनाने, संगठन बनााने, संचार माध्यमों, व्यवस्थाओं पे नियंत्रण तथा मूल्यांकन) में कोई सार्थक अंतर नही है।
4. शैक्षिक योग्यता के आधार पे यू0पी0 तथा सी0 बी0 एस0 सी0 बोर्ड के अध्यापकों के प्रषासनिक योगदान (योजना बनाने, संगठन बनााने, संचार माध्यमों, व्यवस्थाओं पे नियंत्रण तथा मूल्यांकन) में कोई सार्थक अंतर नही है।

सीमांकन

शोध का क्षेत्र विस्तृत एवं व्यापक होता है । एक निष्चित समय में व्यापक अध्ययन कर पाना एवं सभी क्षेत्रों एवं तत्वों को सम्मलित कर पाना अत्यंत कठिन कार्य है । अतः शोधकार्य के अध्ययन क्षेत्र को निर्धारित कर उसका सीमांकन कर दिया गया है।

शोधकर्ता द्वारा समय एवं लॉकडाउन के कारण केवल लखनऊ शहर के ही माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापक को न्यादर्ष के रूप में लिया गया है। कुल 200 अध्यापकों यूपी तथा सी0बी0एस0ई0 मान्य उनको लिया गया है।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

- ❖ सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषा
- ❖ प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण
- ❖ सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से लाभ

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण – यह कथन सर्वविदित है कि अधिकांषतः समस्त मानवीय ज्ञान पुस्तकों तथा पुस्तकालयों से उपलब्ध हो सकता है अन्य जीवधारियों से भिन्न मानव प्रत्येक नई पीढी के साथ पुनः नये सिरे से कार्य आरम्भ करता है, वह अतीत के संचित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है।

ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में किसी भी उपयुक्त अध्ययन के लिए शोधकर्ता को पुस्तकालय तथा उसके साधनों से पर्याप्त परिचय प्राप्त करना आवष्यक होता है। तदोपरान्त ही विषिष्ट ज्ञान के लिए पर्याप्त प्रभावपूर्ण शोध सम्भव हो सकता है। सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोध कार्य का एक अत्यंत उपयोगी पक्ष है।

सम्बंधित साहित्य के अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं से प्रकाषित तथा अप्रकाषित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से होता है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को पहले ज्ञात होता है कि शोध समस्या के क्षेत्र में किस प्रकार का कार्य पहले हो चुका है। अन्य शोधकर्ताओं द्वारा किस प्रकार की प्रक्रिया का चयन पहले किया गया तथा क्या परिणाम प्राप्त हुए। जिससे उसे समस्या का चयन, परिकल्पनाओं का निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

वस्तुतः सम्बंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिषा की ओर वह एक पग भी आगे बढ़ नहीं सकता । जब तक उसे ज्ञात न हो कि उसके क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया तथा उसके निष्कर्ष क्या आए हैं, तब तक न तो वह समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न कर सकता है। इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए

गुड, बार तथा स्केट्स कहते हैं :

'' एक कुषल चिकित्सक के लिए यह आवष्यक है कि अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बंधी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार षिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बंधित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवष्यक है। ''

डब्लू आर. बर्ग के अनुसार – '' किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारषिला के समान है जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य के प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना है अर्थात यह पुनरावृत्ति भी हो सकता है। ''

इस प्रकार अनेक लेखकों ने एकमत से अनुसंधान कार्य को सफलता के लिए सम्बंधित साहित्य का अध्ययन अपरिहार्य माना है।

सहित्य समीक्षा का अर्थ –

साहित्य के समीक्षा में दो शब्द है – ''साहित्य और दूसरा है समीक्षा'' । सहित्य शब्द परम्परागत अर्थ से अलग प्रकार का अर्थ प्रदान करता है। साहित्य शब्द का प्रयोग किसी भाषा के सन्दर्भ में किया जाता है । जैसे – हिन्दी, साहित्य, संस्कृत साहित्य, आंग्ल साहित्य आदि। परन्तु अनुसंधान के क्षेत्र में साहित्य शब्द किसी विषय के अनुसंधान के विषेष क्षेत्र के ज्ञान की ओर संकेत करता है जिसके अन्तर्गत सैद्धान्तिक व्यावहारिक और तथ्यात्मक शोध अध्ययन आते हैं।

''समीक्षा'' शब्द का अर्थ शोध के विषेष क्षेत्र के ज्ञान की व्यवस्था करना एवं ज्ञान को विस्तृत करके यह दिखाना है कि उसके द्वारा किया गया अध्ययन इस क्षेत्र में एक योगदान होगा ।

साहित्य की समीक्षा का कार्य एक अत्यंत महत्वपूर्ण, कठिन व थकान उत्पन्न करने वाला होता है क्योंकि शोधकर्ता को अपने अध्ययन को युक्तिपूर्वक कथन प्रदान करने के लिए प्राप्त ज्ञान को अपने ढ़ंग से एकत्र करना होता है।

गुड, बार और स्केट्स के अनुसार –

योग्य चिकित्सक को औषधि के क्षेत्र में हुए नवीनतम अन्वेषणों के साथ चलना चाहिए स्पष्टता षिक्षा शास्त्र के विद्यार्थी और शोधकर्ता को शैक्षिक सूचनाओं के साधनों और उपयोगों तथा उनके स्थापना से परिचित होना चाहिए।

जान डब्ल्यू0 बेस्ट के अनुसार :

'' व्यावहारिक रूप में सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों और पुस्तकालयों में मिल सकता है । अन्य प्राणियों से भिन्न मानव को अतीत से प्राप्त ज्ञान को प्रत्येक पीढ़ी के साथ नये ज्ञान के रूप में प्रारम्भ करना चाहिए।

ज्ञान के विस्तृत भण्डार में उसका निरन्तर योगदान प्रत्येक क्षेत्र में मानव द्वारा किये गये प्रयासों की सफलता को सम्भव बनाता है ।

सम्बन्धित साहित्य एवं अनुसंधान –

सम्बंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बंधित उन सभी प्रकार की पत्र पत्रिकाओं, अभिलेखों, ज्ञान कोषों में प्रकाषित या अप्रकाषित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों से है, जिनके माध्यम से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के निर्धारण व उसकी रूपरेखा की तैयारी एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायक एवं प्रेरणा प्राप्त होती है।

सम्बन्धित सहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा, वह इसके अभाव में उचित दिषा में आगे नहीं बढ़ सकता । शोधकर्ता को इस बात का पूर्ण ज्ञान होना आवष्यक है कि जिस समस्या का चयन उसने किया है, उससे सम्बंधित क्या–क्या कार्य हो चुके हैं। किन – किन विधियों का प्रयोग इस प्रकार के अनुसंधानों के बारे में किया गया है, विषय से सम्बंधित विभिन्न अनुसंधानो के परिणाम क्या रह हैं? अनुसंधान विषय के बारे में आवष्यक जानकारी प्राप्त करने, अन्तदृष्टि का विकास करने, पुनरावृत्ति से रक्षा करने, उपर्युक्त शोध विधि का चयन करने में सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण सहायता प्रदान करता है।

1. यह अनुसंधान के लिये सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि तैयार करता है और यह जानकारी देता है कि समस्या से सम्बंधित क्षेत्र में कितना और किस प्रकार का कार्य हो चुका है।
2. अनुसंधान विधि का निर्धारण तथा सांख्यिकी के प्रकार के निर्धारण में सहायता प्रदान करता है।
3. इसके द्वारा अनुसंधान की सफलता एवं उपयोगिता के सम्बंध में पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।
4. समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणाएं, सीमांकन तथा परिकल्पना के निर्माण में सहायता करता है।
5. प्राप्त निष्कर्षों के विष्लेषण के लिये सूझ पैदा करता है तथा समर्थन के लिये आधार प्रस्तुत कर अनुसंधानकर्ता में आत्म विष्वास विकसित करता है।

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से लाभ –

1. यह शोध प्रबंध के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में अनुसंधानकर्ता के ज्ञान, उसकी स्पष्टता तथा कुषलता को स्पष्ट करता है।
2. यह अब तक उस क्षेत्र में हो चुके कार्य की सूचना देकर अनावष्यक पुनरावृत्ति से बचाता है।
3. यह समस्या के चुनाव, विष्लेषण एवं कथन में सहायक होता है और पूर्व में किये गये कार्य के आंकड़ें वर्तमान अध्ययन में सहायक होते हैं।
4. अनुसंधान का त्रुटियों से बचाता है जिससे श्रम, समय एवं धन की बचत होती है।
5. यह समस्या के अध्ययन में सूझ पैदा कर समस्या सीमांकन में सहायक होता है और अध्ययन विधि में सुधार कर अनुसंधानकर्ता में आत्मविष्वास उत्पन्न करता है।

अतः उपयुर्क्त विवेचना से स्पष्ट हो जाता है कि सम्बंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर के समान होगा । इसके अभाव में उचित दिषा में वह एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता है।

1- ''भारत में शैक्षिक प्रषासन'' न्यू षिुन्यली

Bhagabhaji and et. Al (1984)

दास (1990)

'माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य का प्रषासन व्यवहार'

इस अध्ययन में उन्होने एक सकरात्मक सम्बंध प्राप्त किया विद्यालय प्रधानाचार्य के प्रषासन व्यवहार में तथा अध्यापक सहयोग में।

तमंग (2011)

विद्यालय प्रषासन में अध्यापक की सहभागिता : माध्यमिक विद्यालय स्तर पर

इस अध्ययन में उन्होने यह प्राप्त किया कि अध्यापकों के प्रषासन सहभागिता तथा अध्यापक अनुभव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

कोरी (2011)

- ए स्टडी आन द रिलेषनषिप बिटवीन हेड एडमिनिष्ट्रेटिव स्टाइल एण्ड क्लासरूम पफार्मेष इन सेकेन्डरी स्कूल।

प्रस्तुत अध्ययन में 210 जवाबकर्ताओं का प्रयोग किया गया । सहसम्बंध रिसर्च डिजाइन का प्रयोग किया गया है। उत्तरों की पुष्टि के लिए मध्यमान, मानक विचलन, पर्सन प्रोडेक्ट मोमेन्ट को रिलेषन का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष के रूप में शोधकर्ता दोनो के मध्य बहुत ही निम्न स्तर का सहसम्बंध प्राप्त करता है।

ओलूवाडारे (2011)

- इनवेस्टिगेटेड द एडमिनिष्ट्रेटिव कम्पेटेनसी नीड ऑफ प्रिंसिपल फार इफेक्टिव स्कूल एंडमिनिष्ट्रेषन एट सेकेन्ड्री स्कूल इन साउथ वेस्ट पोलिटिकल जोन

आंकडो को एकत्र करने के लिए प्रधानाचार्य प्रषासन कौषल सर्व प्रष्नावली का प्रयोग किया गया।

बीसांग (2013)

'' सरकारी तथा गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के मध्य प्रषासन दक्षता '' एक तुलनात्मक अध्ययन

30 विद्यालय के प्रधानाचार्य जिसमें 15 सरकारी तथा गैर सरकारी के रूप में लिये गये, एक प्रष्नावली को अध्यापकों के प्रतिउत्तर के लिए प्रयोग किया गया। मध्यमान व मानक विचलन तथा टी – टेस्ट सांख्यिकी का प्रयोग किया इसके परिणाम स्वरूप हमने यह प्राप्त किया कि सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालय के प्रधानाचार्य के मध्य अलग अलग स्तर अलग अलग भिन्नता है।

अकोमोलाफे (2012)

सरकारी तथा गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के मध्य प्रषासनिक प्रभावषीलता : एक तुलनात्मक अध्ययन

अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्ष 295 जिसमें 191 सरकारी संस्थान तथा 104 गैर सरकारी संस्थानो को लिया गया, डाटा संग्रहण के लिये प्रष्नावली का प्रयोग किया गया है जिसका शीर्षक '' प्रधानाचार्य'' प्रषासनिक प्रभावषीलता माध्यमिक विद्यालयों में जिसमें निष्कर्ष के रूप में यह ज्ञात किया गया कि

सरकारी विद्यालयों में एक मोडन तरह का प्रषासन की प्रभावषीलता है जबकि गैर सरकारी विद्यालयों में उच्च कोटि की प्रषासन प्रभावषीलता है।

मुडलाच (2010)

प्रधानाचार्य प्रभावषीलता परीक्षण और विद्यालय वातावरण से उसका सम्बंध सर्वे तकनीक का प्रयोग किया गया ।
न्यादर्ष के रूप में 240 विद्यालयों के अध्यापकों को लिया गया जिसमें से 60 इस्लामिक गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय थे। निष्कर्ष के रूप में इन्होने ये ज्ञात किया कि ग्रामीण तथा सरकारी दोनो ही विद्यालयों के प्रधानाचार्यो का विद्यालय वातावरण के प्रति सकरात्मक व्यवहार है । उन्होने निष्कर्ष निकाला कि प्रधानाचार्य अपने अन्य अध्यापकों अपनी बात कहने, अपने किसी विचार को सबके समान रखने, आदि में पूर्ण सहयोग प्रदान करता है।

सितम्बर (2015)

प्राथमिक माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों का विद्यालय प्रषासन में सहभागिता : एक तुलनात्मक अध्ययन

वर्तमान अध्ययन प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल के षिक्षकों के बीच स्कूल प्रषासन मे षिक्षक की भागीदारी पर केन्द्रित है । इस नमूने में भारत में पष्चिम बंगाल में पूर्व और पष्चिम बंगाल के 120 स्कूल षिक्षकों को शामिल किया गया है। अन्वेषक ने लेखकों द्वारा ''षिक्षक'' भागीदारी स्कूल पैमाने'' का मान्यकीकृत किया है। शोधकर्ता सांख्यिकीय तकनीक ''टी टेस्ट'' का उपयोग करके डाटा का विष्लेषण करते हैं अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष यह है कि, प्राथमिक विद्यालय के षिक्षक माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों की तुलना में प्रषायन में सक्रिय रूप से भाग ले रहे है।

क्लेमेट (2010)

ने महिला प्रदान नेतृत्व प्रथाओं की जांच की जे घाना के जूनियर हाईस्कूलों और स्कूल प्रषासन की प्रभावषीलता और सुधार में महत्वपूर्ण मानी जाती है जूनियर हाईस्कूल के 5 प्रिंसिपलों का साक्षात्कार लिया गया था, उनके स्कूलों ने 3 महीने के अवधि में देखा था, और स्कूलों के रिकार्डों की जांच की गई थी। निष्कर्षों से पता चला कि स्कूलो ने विज़न और

मिषन साझा किये थे जो प्रिंसिपलो और अन्य हित धारकों द्वारा अच्छी तरह से व्यक्त किये गये थे। प्रधानाचार्यों ने रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करने वाले कार्य वातावरण बनाया : डिज़ाइन और लागू नये और आधुनिक कार्यक्रम : और यथास्थिति का चुनौती दी ।

कैन (2010)

ने कुछ कारको पर गौर करने का प्रयास किया, जिनका मानना था कि स्कूल के प्रभावी प्रषासन पर इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। विभिन्न स्वतंत्र चरों का उपयोग विद्यालय के मुखिया की दक्षता का पता लगाने के लिए किया जाता था, जो दृष्टि बाधित बच्चों के लिए मुखिया के दक्षिता के स्तर के साथ प्रषासक के रूप में और षिक्षक जैसे योग्यता, विकलांगता और गैर विकलांगता क्षेत्र में अनुभव, षिक्षक शक्ति, सिर की विकलांगता, स्कूल के इलाके, स्कूलों के प्रबंधन आदि सांख्यकी तकनीकों जैसे टी टेस्ट और सहसंबंध के गुणांक का उपयोग डाटा का विषलेषण करने के लिए किया गया था। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेष, हिमांचल प्रदेष और उत्तराखंड राज्यों मे स्थिति स्कूलों ने नमूना तैयार किया निष्कर्षो ने संकेत दिया, कि जिन प्रमुखों के पास सामान्य षिक्षा में व्यवसायिक डिग्री और विषेष षिक्षा में डिप्लोमा के साथ स्नात्कोत्तर डिग्री है । विषेष षिक्षा में पेषेवर योग्यता के साथ क्षेत्र में अनुसंधान की पृष्ठ भूमि रखने वाले प्रमुख बेहतर प्रषासक हैं और उन प्रमुखों की तुलना में बेहतर प्रषासनिक कौषल रखते हैं जिनके पास विषेष षिक्षा में व्यवसायिक योग्यता के साथ केवल स्नात्कोत्तर डिग्री है । जिन प्रमुखों के पास विषेष षिक्षा में पेषेवर डिप्लोमा के साथ स्नातक है, वे उन षिक्षको की तुलना में बेहतर षिक्षक हैं, जिनके पास स्नात्कोत्तर उपाधि विषेष षिक्षा में स्नात्कोत्तर व्यवसायिक उपाधि और विषेष षिक्षा में डिप्लोमा है जिन लोगो के अनुभव अधिक हैं वे विकलांगता के क्षेत्र में बेहतर प्रषासक और षिक्षक हैं। जिन मुखियाओं के पास दृष्टि बाधित बच्चों के लिए स्कूलों में अधिक षिक्षक है, उन्होने प्रषासक को और षिक्षको के रूप में प्रमुखों के दक्षता में सुधार किया है।

तृतीय अध्याय अनुसंधान का अभिकल्प

- अनुसंधान का अर्थ एवं परिभाषा
- शैक्षिक अनुंसंधान का अर्थ एवं परिभाषा
- अध्ययन विधि
- जनसंख्या
- न्यादर्श
- प्रयुक्त उपकरण
- आंकड़ो का संकलन

अनुसंधान अभिकल्प –

भूमिका –

प्रत्येक क्षेत्र में अनुसंधान का विषिष्ट स्थान है । वर्तमान एवं पुरातन ज्ञान के परीक्षण सत्यापन एवं मूल्यांकन का यह अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम है ।

साथ ही नवीन ज्ञान के सृजन का भी सषक्त साथ ही नवीन ज्ञान के सृजन का भी सशक्त आधार है । पिछले दो – तीन दषकों में व्यवहार विज्ञानों के क्षेत्र में उसने केन्द्रीय स्थान प्राप्त कर लिया है। इन विज्ञानों के क्षेत्र में लिखी जा रही है। अनुसंधानों की तेजी से बढ़ती हुई संख्या के साथ–साथ उसकी गुणवत्ता में भी वृद्धि हो रही है। विषेष रूप से उसकी विधि एवं प्रक्रिया के क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षो में बहुत अधिक उन्नति हुई है। आज की अधिकतर अध्ययनगत समस्याएं यथार्थता से जुड़ी पाई जाती है उनकी विधि एवं प्रक्रिया भी अधिक सार्थक दिखती है तथा उसमें उच्च स्तरीय सांख्यिकी का प्रयोग किया जा रहा है । शोधकर्ताओं में पहले की तुलना में अनुसंधान का अधिक अच्छा ज्ञान एवं अधिक अच्छी कुषलताएं भी पाई जाती है तो भी अनुसंधान की विधि एवं तकनीकों में अभी बहुत सुधार की आवष्यकता है।

षिक्षा का क्षेत्र अत्यंत विषद् एवं व्यापक है अनेक ज्ञान क्षेत्रों की सीमाओं का उसमें अतिक्रमण एवं समावेष होता है । अतः अनेक प्रकार की समस्याएं उसके क्षेत्र को अच्छादित करती है। उनके समाधान हेतु अनेक प्रकार की अनुसंधान उनके समाधान हेतु अनेक प्रकार की अनुसंधान विधियों एवं तकनीकों का प्रयोग उसके क्षेत्र में किया जाता है।

अनुसंधान डिजाइन –

अनुसंधान डिजाइन अनुसंधान विधियों और शोधकर्ता द्वारा चुनी गई तकनीकों का ढ़ांचा है। डिजाइन शोधकर्ताओं को शोध के तरीकों पर विचार करने की अनुमति देता है जो विषय के उपयुक्त हैं और सफलता के लिए अपने अध्ययन को स्थापित करते हैं ।

एक शोध विषय का डिजाइन अनुसंधान के प्रकार प्रयोगात्मक सर्वेक्षण सह–संबध और इसके उप प्रकार प्रयोगात्मक डिजाइन शोध समस्या वर्णनात्मक के अध्ययन आदि के बारे में बताता है ।

किसी भी अनुसंधान डिजाइन के मुख्य तीन घटक होते है।

1. डेटा संग्रह
2. माप
3. विष्लेषण

कोई संगठन किस प्रकार की अनुसंधान समस्या का सामना कर रहा है तथा उसको किस प्रकार के उपचार की आवष्यकता है इसका निर्धारण एक शोध डिजाइन के द्वारा किया जाता है।

एक अध्ययन का डिजाइन चरण यह निर्धारित करता है कि किस उपकरण का उपयोग किया जाए और उनका उपयोग कैसे किया जाए।

कोई भी प्रभावषाली अनुसंधान डिजाइन आमतौर पर डेटा में एक न्यूनमत पूर्वाग्रह बनाता है और एकत्रित डेटा की सटीकता में विष्वास बढाता है आमतौर पर वांछित परिणाम माना जाता है ।

अनुसंधान डिजाइन के निम्न आवष्यक तत्व है।

1. सटीक उद्देष्य बनाना
2 अनुसंधान एकत्र करने और विष्लेषण करने के लिए लागू की जाने वाली तकनीक
3 एकत्रित विवरण का विष्लेषण करने के लिए आवेदन किया गया तरीका
4 अनुसंधान पद्धति का प्रकार
5 अनुसंधान के लिए संभावित आपत्तियां
6 शोध अध्ययन के लिए सेटिंग्स
7 समय
8 विष्लेषण का मापन

किसी भी अनुसंधान डिजाइन की मुख्य रूप से चार विषेषताएं होती है।

1. तटस्थता –

जब हम अपना शोध कार्य सेट करते है तो हमें अपने डाटा के बारे में एक धारणा बनानी पड़ सकती है जिसे आप एकत्र करने की उम्मीद करते है अनुसंधान डिजाइन में अनुमानित परिणाम पूर्वाग्रह और तटस्थ से मुक्त होना चाहिए । अंतिम मूल्यांकन किए गए अकों और कई व्यक्तियों से निष्कर्ष के बारे में राय विचार करें जो व्युत्पन्न परिणामों से सहमत है।

2. विश्वसनीयता :

नियमित रूप से किए गए शोध के साथ शोधकर्ता इसमें हर बार समान परिणाम की अपेक्षा करता है।

आपके डिजाइन से संकेत मिलता है कि परिणामों में मानक को सुनिष्चित करने के लिए अनुसंधान प्रष्न कैसे बनाएं।

यदि आपका डिजाइन विष्वनीय है तो आप केवल अपेक्षित परिणामों तक

ही पहुंच पायेंगें।

3. वैधता –

कई मापने के हालांकि एकमात्र सही माप उपकरण वे हैं हालांकि एकमात्र सही माप उपकरण वे हैं शोध के उद्देश्य के अनुसार परिणामों को गज करने में एक शोधकर्ता की मदद करते हैं इस डिजाइन से विकसित प्रष्नावली तब मान्य होगी।

4. सामान्यीकरण –

शोधकर्ता के डिजाइन का परिणाम जनसंख्या पर लागू होना चाहिए न केवल प्रतिबंधित नमूने के लिए। एक सामान्यीकृत डिजाइनर का तात्पर्य है कि आपका सर्वेक्षण समान सटीकता के साथ आवधि के किसी भी हिस्से पर आयोजित किया जा सकता है।

शोधविधि–

षिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य में बहुत सारी विधियां प्रचलित हैं परन्तु प्रत्येक अनुसंधान में समस्या शोध की प्रकृति स्थिति व उद्देष्यों के आधार पर सही व उचित विधि का उपयोग अनुसंधान में किया जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य के आदर्ष मूलक सर्वेक्षण पद्धति के अन्तर्गत उद्देष्यपूर्ण पद्धति को अपनाया गया है।

सर्वेक्षण शब्द से आशय खोज या अवलोकन से है। अनुसंधान के लिए समस्या सम्बंधी तथ्यों का अध्ययन वर्णन एवं व्याख्या करने वाली विधि सर्वेक्षण विधि कहलाती है।

सर्वेक्षण का शाब्दिक अर्थ सर तथा ''वेयर'' दो शब्दों से मिलकर हुआ है। अतः सर्वेक्षण का सही तात्पर्य हुआ अनुसंधानकर्ता द्वारा स्वयं जाकर समस्या से सम्बंधित परिस्थितियों को देखना तथा तथ्यों व आकंडों संकलन करना ।

सर्वेक्षण अनुसंधान का षिक्षा एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में अधिक प्रचलन है इस प्रकार के अनुसंधान में यह विधि व्यापक रूप से प्रयोग में लायी जाती है।

कालपीयर्सन के अनुसार –

'' सर्वेक्षण से आषय उन सभी क्रियाओं से होता है जो सर्वेक्षणकर्ता द्वारा स्वयं धरना स्थल पर जाकर सम्पादित की जाती है। सर्वेक्षण विधि को साधारणतया ऐसे अनुसंधानों के लिये प्रयुक्त किया जाता है जिनका उद्देष्य यह ज्ञात करना होता है कि वर्तमान में स्थिति क्या है कि वर्तमान में स्थिति क्या है इसका कार्य तथ्यों व आकंडों को

इकट्ठा करके उनका सामान्यीकरण, वर्गीकरण, मापन, मूल्यांकन व सारणीयन करके निष्कर्ष प्राप्त करना होता है। इसके लिए यह आवष्यक है कि अनुसंधानकर्ता का कार्य क्रमबद्ध व योजनाबद्ध तरीके से होना आवष्यक है तभी यह विधि सफल होती है व निष्कर्ष प्राप्त होते हैं । सर्वेक्षणात्मक पद्धति ज्ञान के विकास में सहायक होते है।

षिक्षा व मनोविज्ञान के क्षेत्र में इस प्रकार के अनुसंधान में यह विधि व्यापक रूप से प्रयोग मे लायी जाती है। जिसमें किसी विषिष्ट मानव समुदाय संस्था नीति अथवा योजना की आलोचनात्मक ढंग से व्याख्या की जाती है।

प्रस्तुत अध्ययन क लिए अपनाई गई सर्वेक्षण विधि–

प्रत्येक अनुसंधान एक विषेष प्रकृति की समस्या का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करता है । जिस प्रकार की समस्या की प्रकृति होगी वैसी ही अध्ययन विधि अनुसंधान हेतु अपनाई जाती है । षिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन करने के लिये अनुसंधान की अनेक विधियां प्रयुक्त की जाती है अनुसंधान में अधिक ठोस एवं वैज्ञानिक परिणामों की प्राप्ति हेतु अध्ययन विधि का चयन किया जाता है ।

यदि अनुसंधानकर्ता द्वारा सही विधि का चयन नहीं किया जाता है तो सम्बन्धित समस्या की व्याख्या स्पष्ट रूप से नहीं की जा सकती है । अतः अनुसंधान में प्रयुक्त समस्या की स्पष्ट व्याख्या हेतु शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

सर्वेक्षण विधि का अर्थ एवं परिभाषा –

किसी भी क्षेत्र में सुधार लाने के लिए यह आवष्यक है की हमें उस क्षेत्र की तात्कालिक परिस्थितियों का ज्ञान हो।

सर्वेक्षण से तात्पर्य ऐसे अध्ययनों से है जिसमें कि अनुसंधानकर्ता किसी स्थान पर कुछ अवस्थाओं या परिस्थितयों से सम्बंधित सही सूचनाओं का संचालन करता है । सर्वेक्षण द्वारा एकत्रित सामग्री विभिन्न प्रकार की हो सकती है। शैक्षिक क्षेत्र में सर्वेक्षण एक विवरणात्मक अनुसंधान का एक अभिन्न एवं महत्वपूर्ण अंग रहा है। लेकिन वर्तमान में सर्वेक्षण विधि की महत्ता पृथक व स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

शब्दिक अर्थ –

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी Survey का हिन्दी रूपान्तरण है जो दो शब्दों से मिलकर बना है, जो मूल रूप से Sur (Sor) अमल Veerir पर

आधारित हैं।

Sur = Sor = Over

vey = veeir = to look

सामान्य अर्थों में –

सर्वेक्षण से तात्पर्य एक ऐसी अनुसंधान प्रणाली से होता है जिसमें अनुसंधानकर्ता स्वयं घटना स्थल पर जाकर किसी विषेष घटना का निरीक्षण करता है तथा उसके सम्बंध में खोज करता है। शब्द कोष के अनुसार सर्वेक्षण का अर्थ प्रायः सरकारी आलोचनात्मक निरीक्षण होता है जिसका उद्देष्य एक क्षेत्र की एक स्थिति या उसके प्रचलन के सम्बन्ध में यथार्थ सूचना प्रदान करना होता है।

जैसे – स्कूल सर्वेक्षण, सामाजिक सर्वेक्षण व आर्थिक सर्वेक्षण इत्यादि।

सर्वेक्षण विधि की परिभाषाएँ वेबस्टर शाब्दकोष के अनुसार–

'वास्तविक जानकारी के लिए किया गया आलोचनात्मक निरीक्षण ही सामाजिक सर्वेक्षण कहलाता है।''

मोर्श के शब्दों में–

''सर्वेक्षण एक विषेष समाजिक स्थिति, समस्या अथवा समष्टि से सम्बन्धित उद्देष्य हेतु व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक विष्लेषण की एक विधि मात्र है।''

डिक्शनरी ऑफ सोसियोलोजी –

''एक समुदाय के सम्पूर्ण जीवन या उसके किसी एक पक्ष के सम्बन्ध में व्यवस्थित और पूर्ण तथ्य संकलन और तथ्य विष्लेषण का नाम ही सर्वेक्षण है।''

सर्वेक्षण विधि के उद्देश्य :

सर्वेक्षण विधि के अग्रलिखित उद्देष्य हो सकते है :–

1. सूचनाओं का संकलन

कुछ सर्वेक्षण कतिपय विषिष्ट सूचनाओं को एकत्रित करने के लिए ही किए जाते है। जैसे देष में षिक्षित बेकारों की संख्या, साक्षरता, शाला में जाने योग्य उम्र वाले बालकों की संख्या, लोगों के भोजन सम्बन्धी आदतें आदि।

2. किसी विशिष्ट कारक के अस्तित्व का पता लगाना

सामाजिक सर्वेक्षण का उद्देष्य किसी विषिष्ट कारक के अस्तित्व का पता लगाना भी होता है। जैसे – कितने लोग सह षिक्षा से सहमत है? कितने लोग सार्वजनिक क्षेत्रों के उद्योगों में कर्मचारियों की भागीदारी के पक्ष में हैं ? आदि ऐसे अनेकों सर्वेक्षण हो सकते हैं जिसमें हम एक विषेष मन, दृष्टिकोण अथवा विचार का पता लगाना चाहते हो। जनमत जानने के लिए जो सर्वेक्षण किये जाते हैं वे भी इसी श्रेणी में आते हैं।

आजकल राजनीतिज्ञों की लोकप्रियता जानने के लिए जो सर्वेक्षण किये जाते हैं, वे इसी श्रेणी में आते हैं।

3. किसी व्यवहार अथवा घटना का पूर्वानुमान लगाना

अनेक बार राजनीतिषास्त्र के ज्ञाता चुनावों के पूर्व सर्वेक्षण करके यह पूर्वानुमान लगाते है कि कौन से शून्य को कितने मत मिलने की सम्भावना है? इस वर्ष फसल कितने प्रतिषत बढ़ सकती है ? इन सभी की तात्कालिक परिस्थितियों को सर्वेक्षण करके पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।

4. दो चरों के बीच पारस्परिक सम्बन्धों का पता लगाना

कई बार सर्वेक्षण के आधार पर हम दो चरों के बीच सम्बंध का अध्ययन करना चाहते है।

उदाहरण के लिए – क्या आयु बढ़ने के साथ अध्यापन कुषलता बढ़ती है ? आदि ऐसे अनेक उदाहरण हो सकते है जो यह बताते है कि सर्वेक्षण का उपयोग चरों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करने हेतु किया जाता है।

5. कार्यक्रम के सम्बन्ध का पता लगाना

सर्वेक्षण का एक मुख्य उद्देष्य है कि वह सामाजिक समस्याओं की उत्पति के कारणों का पता लगाये और जब तक कार्य–कारण व सम्बन्धों का पता नहीं लगाया जाता, तब तक किसी भी अध्ययन की वैज्ञानिक सार्थकता नहीं है। अतः सामाजिक सर्वेक्षण द्वारा घटना से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन एवं उनका विष्लेषण करके कारण को ढूंढा जाता है।

6. कार्यवाहक उपकल्पनाओं का परीक्षण करना

सर्वेक्षण संचालित करने से पूर्व कुछ विचार या कार्यवाहक उपकल्पनाएँ निर्मित की जाती हैं और तत्पष्चात् उससे सम्बन्धित तथ्यों को एकत्र कर उनकी सत्यता की जाँच की जाती हैं ऐसे सर्वेक्षण अनुसंधान के महत्वपूर्ण अंग बन जाते हैं। यदि कार्यवाहक उपकल्पनाओं की जाँच

सर्वेक्षण द्वारा नहीं की जायें तो अनुसंधान विष्वसनीय और प्रमाणित नहीं हो सकते। अतः सर्वेक्षण उनकी सार्थकता की परीक्षा करता हैं।

7. व्यवहारिक उपयोगिता

अधिकांषतः सर्वेक्षण की उपयोगिता व्यवहारिक अधिक होती हैं। इसके द्वारा समस्या का अध्ययन कर उससे सम्बन्धित तथ्यों का विस्तृत रूप से संकलन किया जाता हैं और उन्हीं तथ्यों के आधार पर कार्य–कारण के सम्बन्ध का पता लगाकर एक सुधारात्मक परियोजना तैयार की जाती है। उदाहरणार्थ– विभिन्न सामाजिक बुराइयाँ, बाल–अपराध, बेकारी व कलह आदि विकट समस्याओं के समाधान के लिए आजकल सामाजिक सर्वेक्षण का उपयोग व्यापक स्तर पर किया जाने लगा है। यह सामाजिक समस्याओं के समाधान व प्रगति का एक प्रभावषाली प्रयास है।

सर्वेक्षण विधि की विशेषताएँ

सर्वेक्षण विधि वर्तमानकाल में विद्यमान तथ्यों का अध्ययन, वर्णन एवं व्याख्या करने का एक उत्तम साधन हैं सर्वेक्षण विधि की मुख्य विषेषताएँ निम्नलिखित हैं –

1. व्यापक एवं विस्तृत अध्ययन –

इस विधि की एक महत्वपूर्ण विषेषता यह है कि सर्वेक्षण द्वारा सामाजिक तथा व्यावहारिक समस्याओं से सम्बन्धित व्यापक तथा विस्तृत क्षेत्रों का सुविधापूर्वक अध्ययन किया जाता है।

2. प्रत्यक्ष व निकट सम्पर्क का अवसर –

सर्वेक्षण के द्वारा अध्ययन के अन्तर्गत जब शोधकर्ता घटना स्थल पर प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदाता के सम्पर्क में आता है तब उसे उत्तरदाता के मनोभावों, विचारों तथा अध्ययन सम्बन्धी अन्य तत्वों का निकट से अध्ययन करने का अवसर मिलता है।

3. सामाजिक तथ्यों एवं क्रियाओं का अध्ययन –

सामाजिक तथ्यों का संकलन तथा मानवों के विषय में लोगों के क्या विचार हैं? इन सबका अध्ययन भी सामाजिक सर्वेक्षण पद्धति के अन्तर्गत किया जाता है।

4. वर्तमान परिस्थितियों का निरीक्षण एवं विवेचन

वर्तमान परिस्थितियों के महत्वपूर्ण पक्षों का अध्ययन और विष्लेषण करके प्रस्तुत स्थिति के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करने का कार्य करना भी सर्वेक्षण विधि की एक विषेषता है।

5. परिशुद्ध, वस्तुपरक एवं विश्वसनीय आंकड़ो का संकलन–

सर्वेक्षण पद्धति एक वैज्ञानिक पद्धति है। अतः आधुनिक सामाजिक सर्वेक्षण में विषेषतः सर्वेक्षण में अध्ययन का आधार प्रायः यादृच्छिक न्यार्दा रहता है जिसे समष्टि से सम्बन्धित परिषुद्ध, वस्तुपरक, विष्वसनीय आँकड़ो के संकलन में सहायता मिलती है।

6. अधिक मितव्ययी व सुविधाजनक अध्ययन–

सर्वेक्षण द्वारा किये गये अध्ययन, प्रयोगषाला अध्ययन से अधिक मितव्ययी रहते है क्योंकि सर्वेक्षण द्वारा अध्ययन करने से अधिक एकत्रित सूचना अपेक्षाकृत कम खर्च पर तथा कम समय में उपलब्ध होती है।

सर्वेक्षण विधि के प्रमुख सोपान –

सर्वेक्षण विधि के निम्नलिखित सोपान हैं :–

1. उद्धेश्यों का निर्धारण

सर्वेक्षण को वैज्ञानिक कहलाने के लिए यह आवष्यक है कि सर्वेक्षण पूर्व निर्धारित सुनिष्चत उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया हो। उद्देष्य जितने स्पष्ट होंगे नतीजे भी उतने ही स्पष्ट होंगे। उद्देष्य के अनुसार ही आंकड़ो इकट्ठे किये जाते हैं।

2. उपकरणों एवं प्रविधियों का चयन

उद्देष्यों के अनुसार ही उपकरण और प्रविधियों का निर्धारण होता है। कुछ उपकरण बने–बनाए होते हैं। जिन उपकरणों का जैसे – प्रष्नावलियाँ, साक्षात्कार, प्रेक्षण आदि प्रविधियों का प्रयोग करना हो तो उसकी योजना बना लेनी चाहिए।

3. प्रतिदर्श का चयन

जिस सर्वेक्षण में समय और चयन खर्च करने की सम्भावना हो, वहाँ प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया जाता है। इस सोपान में प्रतिदर्ष का तरीका व आकार, सर्वेक्षण के उद्धेष्य, सर्वेक्षण में प्रयुक्त विधि मे प्रतिदर्ष का तरीका व आकार, सर्वेक्षण के उद्धेष्य, सर्वेक्षण में प्रयुक्त विधि आदि पर निर्भर करेगा।

4. सर्वेक्षण कार्य की विधियों का निर्धारण

प्रतिदर्ष चयन के बाद दत्त संकलन यानि कौन से व्यक्तियों का साक्षात्कार करना है? कब करना है? आदि की भी योजना बना लेनी चाहिए।

5. दत्तों के संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण

सर्वेक्षण विधि में अगला सोपान समस्या के निष्चित चरों के लिए

उपयुक्त उपकरणों का चयन करना होता है। ये उपकरण प्रमापीकृत परीक्षण या अप्रमापीकृत परीक्षण होते हैं।

7. दत्त संकलन का विश्लेषण

दत्त संकलन करने के पष्चात् उस सामग्री की सारणी बनाकर उसका विष्लेषण करना होता है। विष्लेषण की योजना बना लेने पर उसी के अनुकूल दत्त सामग्री का संकलन किया जा सकता है।

2. सर्वेक्षण विधि का महत्त्व

षिक्षा अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का पर्याप्त महत्त्व है और यह बड़े व्यापक रूप में व्यवहार में आता है। किसी भी क्षेत्र में सुधार लाने के लिए हमें इस क्षेत्र की तात्कालिक परिस्थितियों की जानकारी होना अत्यन्त आवष्यक है। यह जानकारी हम सर्वेक्षण विधि द्वारा सही प्राप्त कर सकते हैं। यह विधि ज्ञान के विकास में योग देती है। क्योंकि यह किसी व्यक्ति के कार्य की प्रकृति के लिए तीक्ष्ण दृष्टि प्रदान करती है। जैसे – विभिन्न अवस्थाओं में बालकों का अध्ययन करके हम, आये निष्कर्षो की आयु के अनुकूल बनाने के लिए विभेदी कृत करके विकास के रूख का स्वरूप प्रदान करते हैं।

सर्वेक्षण विधि वर्तमान तथा व्यवहारिक समस्याओं का निराकरण करती है। इसमें सूचनाओं का संकलन होता है। किसी विषिष्ट कारक के अस्तित्व का पता लगाया जा सकता है। इस विधि द्वारा किसी व्यवहार अथवा घटना का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। चूंकि सर्वेक्षण विधि द्वारा वर्तमान एवं व्यवहारिक समस्याओं का निराकरण किया जाता है। अतः इसी आधार पर शोधकर्ता ने भी शोध समस्या,**''विद्यालय प्रशासन गतिविधियों में शिक्षक की सहभागिता** : एक तुलनात्मक अध्ययन '' के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

3. सर्वेक्षण विधि का औचित्य

शोध की सभी विधियाँ यद्यपि महत्वपूर्ण एवं अपना एक अलग स्थान एवं महत्व रखती हैं। वस्तुतः यह शोध की प्रवृति पर निर्भर करता है कि किसी शोध विषय हेतु कौनसी विधि उपयुक्त है?

सर्वेक्षण विधि द्वारा सामान्य रूप से उन्हीं तथ्यों का संकलन किया जाता है जो वर्तमान से सम्बन्धित है। इसके अतिरिक्त सर्वेक्षण विधि में एक निष्चित समय में किसी बड़े समूह से तथ्यों को एकत्रित करके सामान्य सिद्धान्त या सामान्य स्थिति की जानकारी प्राप्त की जाती हैं प्रस्तुत

शोध वर्तमान परिस्थितियों से महत्वपूर्ण रूप से सम्बन्धित है तथा अपेक्षाकृत बड़े समूह से तथ्य एकत्रित कर विष्लेषण किया जाता है।

अतः इस शोध अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त करना सभी दृष्टि से अपनी कसौटी पर खरा उतरता है।

जनसंख्या –

किसी भी शोध में जनसंख्या शब्द का अर्थ भिन्न होता है । जनसंख्या का तात्पर्य सम्पूर्ण इकाइयों के निरीक्षण से होता है। इसमें कुछ इकाइयों का चयन करके न्यायदर्ष बनाया जाता है । न्यायदर्ष की इकाइयों के निरीक्षण तथा मापन से जनसंख्या की विषेषताओं के सम्बंध में अनुमान लगाया जाता है।

जनसंख्या में सभी प्रकार पुरूष , स्त्री, बच्चे का लेखा–जोखा तैयार किया जाता है। शोध की जनसंख्या में एक विषिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है। वह सजातीय होते हैं।

न्यादर्श –

'' प्रत्येक विज्ञान शाखा में हमारे साधन सीमित है। इसीलिए सम्पूर्ण तथ्य के एक अंष से अधिक का अध्ययन नहीं कर पाते तथा उसके बारें में ज्ञान प्रस्तुत किया जाता है। ''

डब्ल्यू0 जी0 कोकरन

न्यादर्ष प्रारूप का तात्पर्य चयन करना तथा अनुमान लगाना दो सम्मिलित प्रक्रियाओं से हैं । न्यादर्ष ऐसा होना चाहिए जिससे जनसंख्या के बारे में अनुमानों में कम से कम त्रुटि हों।

सामाजिक विषयों में सभी व्यक्तियों से सूचनायें एकत्रित करना सम्भव नहीं हो पाता है जिससे शोध अध्ययन को सार्थक कर लिया जाता है जिसे न्यादर्ष कहते हैं।

सामाजिक विषयों, व्यावहारिक विज्ञानों के शोध में कार्यों एवं सांख्यिकीय विधियों के लिए न्यादर्ष मूल आधार होता है । यदि न्यादर्ष का चयन समुचित नहीं किया गया तब कोई सांख्यिकीय विधि परिणामों एवं निष्कर्षों को नहीं सुधार सकती है। वास्तव में न्यादर्ष शोध की प्रमुख प्रविधि है। शोधकर्ता को इसके ज्ञान तथा कौषल की आवष्यकता होनी चाहिए। न्यादर्ष के चयन में ऐसी विधियों का प्रयोग किया जाता है कि जनसंख्या से चयन की गई इकाइयों का प्रतिनिधित्व कर सकें तथा

प्रत्येक इकाई को न्यादर्ष में सम्मिलित होने का समान अवसर दिया जायें।

प्रस्तुत शोध में यू0पी0 बोर्ड के षिक्षक तथा सी.बी.एस.ई. बोर्ड के षिक्षकों को न्यादर्ष के रूप में सम्मिलित किया गया है।

राज्य का चयन –

चूकिं शोधकर्ता, उत्तर प्रदेश राज्य का निवासी है अतः निर्णयात्मक चयन विधि के अन्तर्गत उत्तर प्रदेष राज्य का चयन किया है।

चूंकि शोधकर्ता लखनऊ संभाग का निवासी है। अतः निर्णत्यामक चयन विधि के अन्तर्गत लखनऊ संभाग का चयन किया गया।

संभाग का चयन –

शोधकर्ता ने लखनऊ संभाग के निम्न हिन्दी व अग्रेंजी माध्यम के विद्यालयों को लिया है।

अंग्रेजी (सी.बी.एस.ई. बोर्ड) व हिन्दी (यू0पी0 बोर्ड) माध्यम के विद्यालय

स्कूल का नाम	माध्यम
1. ग्रडियन्ट पब्लिक स्कूल हिन्दी	हिन्दी/अग्रेंजी मा0
2. गुरूकुल एकेडमी अग्रेंजी	अग्रेंजी मा0
3. न्यू आलमाईटी स्कूल	हिन्दी मा0
4. कैपिटल पब्लिक स्कूल	अग्रेंजी मा0
5. लखनऊ पब्लिक स्कूल	अग्रेंजी मा0
6. महावीर पब्लिक स्कूल	हिन्दी मा0
7. बालिका इण्टर कालेज	हिन्दी मा0

को उद्ेष्यात्मक विधि के अन्तर्गत सम्मिलत किया गया है।

न्यादर्श चयन विधि – न्यादर्ष सदैव दो प्रकार के होते हैं।

1. सम्भाव्य न्यादर्ष
2. असम्भाव्य न्यादर्ष

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने प्रथम प्रकार की न्यायदर्ष चयन विधि का प्रयोग किया है।

सम्भाव्य न्यायदर्श – न्यादर्ष के चयन में जब ऐसी विधि का प्रयोग करते हैं जिससे जनसंख्या के प्रतिनिधित्व की सम्भावना होती है तब उसे सम्भाव्य न्यादर्ष की संज्ञा दी जाती है।

जी0 सी0 हेल्मेस्टर के अनुसार – " सम्भाव्य न्यादर्ष उसे कहते हैं जिसमें जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य को न्यादर्ष में सम्मिलित होने या चयन किये जाने की समान सम्भावना होती है। एक सदस्य का दूसरे पर कोई भी बंधन नहीं होता है। प्रत्येक पूर्ण रूप से स्वतंत्र होता है।

सम्भाव्य न्यादर्ष दो प्रकार के होते हैं।

1. सांख्यिकीय नियमित्ताओं का सिद्धांत
2. बड़े न्यादर्ष की शक्ति का सिद्धांत

1. **सांख्यिकीय नियमित्ताओं का सिद्धांत** – इस सिद्धांत में सम्भाव्य नियम निहित होता है यदि एक होते न्यादर्ष को अनियमितीकरण विधि से चयन किया गया है तो यह जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। ऐसे न्यादर्ष से प्राप्त परिणामों से सामान्यीकरण किया जा सकता है। न्यादर्ष की सांख्यिकी के आधार पर जनसंख्या के मानकों का अनुमान लगाया जा सकता है। सार्थकता के लिए परिक्षणों का प्रयोग किया जा सकता है।
2. **बड़े न्यादर्श की शक्ति का सिद्धांत** : यह सिद्धांत प्रथम सिद्धांत का ही एक पक्ष है एक छोटे न्यादर्ष की अपेक्षा बड़ा न्यादर्ष जनसंख्या का अच्छा प्रतिनिधित्व करता है। न्यादर्ष त्रुटि भी कम होती है ।

   प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने सम्भाव्य न्यायदर्ष के साधारण अनियमित न्यादर्ष चयन विधि का प्रयोग किया है।

   साधारण अनियमित न्यादर्श : यह न्यादर्ष अनियमित विधि द्वारा चुना जाता है। इस चयन विधि में जनसंख्या अथवा समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति को न्यादर्ष में एक दूसरे में चयन के लिए समान अवसर प्राप्त होता है
   इस न्यादर्ष में एक दूसरे के चयन पर प्रभाव नहीं डालता है।

   अनियमित न्यादर्श में प्रयुक्त सावधानियां – इस प्रकार के न्यादर्ष के चयन में अधोलिखित सावधानियां बरतनी चाहिए –

1. जिस जनसंख्या से न्यादर्ष चुनना हो वह पूर्ण रूप से ज्ञात होनी चाहिए, अर्थात जनसंख्या की सूचि उपलब्ध होनी चाहिए।
2. जनसंख्या की प्रत्येक इकाई के गुण लगभग समान होने चाहिए।
3. प्रत्येक इकाई स्वतंत्र होनी चाहिए।
4. एक इकाई के चयन का दूसरी इकाई के चयन पर प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।
5. चयन की हुई इकाई में से कोई इकाई छूटनी नहीं चाहिए और किसी के स्थान पर दूसरी इकाई को नहीं रखना चाहिए।
6. न्यादर्ष पक्षपात एवं अन्य दोषों से यथा सम्भव मुक्त होना चाहिए।

साधारण अनियमित न्यादर्श चयन का महत्व –

1. अनियमित न्यादर्ष प्रायः व्यक्तिगत पक्षपात से मुक्त होता है।
2. अनियमित न्यादर्ष जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है।
3. यह चयन विधि अत्यंत सरल है। शोधकर्ता को चयन करनें में कोई सोच विचार नहीं करना पड़ता है।
4. अनियमित न्यादर्ष की त्रुटियों को सरलतापूर्वक ज्ञात किया जा सकता है।
5. इस चयन विधि का प्रयोग सभी प्रकार के प्रयोगों, अनुसंधानों एवं सर्वेक्षणों के लिए किया जा सकता है।

संख्यिकी विश्लेषण –

ये परीक्षण आपको बताता है कि समूहों के बीच अंतर कितना महत्वपूर्ण है, दुसरे शब्दों में, इससे आपको पता चलता है कि क्या वे अंतर (मतलब/औसत में मापे गए) संयोग से हो सकते हैं।

टी स्कोर –

टी स्कोर दो समूहों के बीच अंतर का एक अनुपात है ।
टी स्कोर जितना बड़ा होगा समूहों के बीच उतना ही अधिक अंतर होगा। टी स्कोर जितना बड़ा होता है समूहों के बीच उतनी ही समानता होती है। टी के एक टी स्कोर का मतलब है समूह एक दूसरे से तीन गुना अलग है क्योंकि वे एक दुसरे के भीतर हैं। जब आप परीक्षण में भाग लेते हैं तो टी मूल्य जितना बड़ा होता है उतनी ही अधिक संभावना कि परिणाम दोहराएं जा सकते हैं।

- एक बड़ा टी स्कोर आपको बताता है कि समूह अलग अलग हैं।

- एक छोटा टी स्कोर आपको बताता है कि समूह समान हैं।

टी स्कोर के प्रकार–

1. एक स्वतंत्र नमूने टी स्कोर दो समूहों के साधनों की तुलना करता है।
2. एक युग्मित नमूना टी टेस्ट की तुलना एक ही समूह से अलग अलग समय पर होती है , जैसे– एक वर्ष अलग।
3. एक नमूना टी टेस्ट एक ज्ञात समूह के खिलाफ एक एक समूह के माध्यम का परीक्षण करता है।

उपकरण विश्लेषण –

स्कूल प्रषासन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बड़ी संख्या में ऐसे व्यक्तियों का संयुक्त संचालन शामिल है जिनके द्वारा स्कूल में षिक्षा के पूरे ताने बाने को अच्छी कार्य स्थितियों में बनाए रखा जाता है।

स्कूल में हेडमास्टर को एक कुषल व्यक्तित्व और पेषेवर क्षमता पर काफी हद तक स्कूल की टोन और दक्षता निर्भर करेगी । उन्हें एक अच्छा नेता होना चाहिए। जो अपने निर्देषन में, काम करने वाले षिक्षकों को प्रेरित करने में सक्षम हो।
लोकतंत्र में, वह उन्हे नहीं चला सकता । उन्हें लोकतांत्रिक नेतृत्व का नेतृत्व करना चाहिए। जिसका उद्देष्य कर्मचारियों और स्कूल की प्रभावशीलता और सुधार को बढ़ाना है।
हुषषिुन्य (1985) नें पाया कि षिक्षक और प्रधानाचार्य दोनों ही स्कूल की प्रभावषीलता के लिए लोकतांत्रिक भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हैं एक प्रधानाध्यापक के लिए यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि वह एक प्रधान षिक्षक है, कि कई षिक्षक अनुभवी और योग्य होने के साथ साथ योग्य भी हैं और इसलिए उन्हे स्कूल प्रषासन के मामलों में संकात्मक कहना चाहिए।

दास (1990) और शुक्ला (1980) को सिर के प्रषासनिक प्रवाह और काम के प्रति षिक्षकों के रवैये के बीच सकारात्मक सम्बंध मिला ।
हेडमास्टर और षिक्षक शैक्षिक सिद्धांत और व्यवहार में नये विकास के बारे में एक दूसरे को षिक्षित कर सकते हैं। विद्यालय में आचरण के वांछित मानकों को लाने के लिए षिक्षक जिम्मेदार हैं, इसलिए उन्हे स्कूल के वास्तविक दिन – प्रतिदिन प्रषासन में एक बड़ा हिस्सा देने की आवष्यकता है।
गणपति (1982) ने देखा कि हेडमास्टर ने सभी षिक्षकों से विचार की आवष्यकता का विष्लेषण करते हुए परामर्ष किया।
राजीवलोचन (1981) ने यह भी पाया की स्कूल प्रमूखों और उनके षिक्षकों के मनोबल के बीच नकारात्मक सम्बंध था। इसी तरह के निष्कर्ष महंत (1979) नाइक (1982) और पांडा (1975) द्वारा बताये गये थे।

‘ाुन्योल

हाईस्कूल में आंतरिक प्रषासन में शामिल कार्य को प्रषासक के शीर्षक के बावजूद किया जाना चाहिए। सामान्य धारणा यह है कि बड़े स्कूलों में प्रषासक उच्च विद्यालय का प्रधानाध्यापक होता है। प्रषासन के कई कर्तव्यों को सहायक प्रधानाध्यापकों और स्कूल स्टाफ गुप्ता (1976) के अन्य आवेगों द्वारा निष्पादित किया जायेगा। पाया गया कि शिक्षकों को सिर्फ प्रषासनिक पद पर रखा गया था सहषिक्षा प्रषासन में वरिष्ठता के आधार पर आगे की भागाजी (1984) ने पाया की सह–क्रियात्मक गतिविधियों की प्रोगामिंग का समर्थन करने पर जीन और खेल के प्रभारी षिक्षक पूरे षुिन्य से प्रत्याषित थे।

उपरोक्त चर्चाओं में यह स्पष्ट है कि स्कूल प्रषासन में षिक्षक की भागीदार महत्वपूर्ण है और स्कूल की गुणवत्ता और अकादमिक लक्ष्य उपलब्ध के लिए भी आवष्यक है अब तक किसी भी शोधकर्ता नें इस चर के महत्व को जारी नहीं किया है। इसलिए इस शोधअंतर को भरना है स्कूल प्रषासन में षिक्षकों की भागीदारी के स्तर को निर्धारित करने के लिए बिक्री विकसित करने का वर्तमान प्रयास किया गया था। उपरोक्त चर्चाओं में यह स्पष्ट है कि स्कूल प्रषासन में षिक्षक की भागीदारी महत्वपूर्ण है और स्कूल की गुणवत्ता और अकादमिक लक्ष्य उपलब्ध के लिये भी आवष्यक है अब तक किसी भी शोधकर्ता ने इस

चर के महत्व को जारी नहीं किया है इसलिए इस शोध अंतर को भरना है स्कूल प्रषासन में षिक्षकों की भागीदारी के स्तर को निर्धारित करने के लिए बिक्री विकासित करने का वर्तमान प्रयास किया गया था।

स्कूल प्रषासन स्केल (टी0पी0एस0ए0एस0) में षिक्षक की भागीदारी का विकास स्कूल प्रषासन स्कूल प्रषासकों के कर्तव्यों और कार्यों के क्षेत्र में उपलब्ध साहित्य की गहन समीक्षा के बाद स्कूल प्रषासन में षिक्षकों की भूमिका स्कूल के षिक्षकों के लिए इस पैमाने का निर्माण और मानकीकरण करने के लिए कई बयान एकत्र किये गये थे। साहित्य के एक विस्तृत समीक्षा में उन क्षेत्रों से राहित होने के लिये सम्भव बना दिया जो पूरी तरह से स्कूल प्रषासन का गठन करते हैं ।
जैसे कि योजना आयोजन संचार, बजट, नियंत्रण, निर्णाय लेने और पाठ्येत्तर और सह पाठ्यक्रम गतिविधियों के मूल्यांकन इसके अलावा, प्रोग्राम उच्च सहायक प्रमुखों और वरिष्ठ स्कूल क्षेत्रों की पहचान करने और वस्तुओं को अंतिम रूप देने से पहले षिक्षकों से परामर्ष किया गया था।
पहले चर्चा किये गये क्षेत्रों को कवर करते हुए लगभग 45 आइटम तैयार किये गये थे यह वास्तव में 34 वस्तुओं को बनाये रखने का निर्णय लिया गया था। जिस पर विषेषज्ञों द्वारा 90 से 100 प्रतिषत समझौता किया गया था। स्कूल के प्रषासन का गठन करने वाले षिक्षकों के कार्यात्मक अनुमान प्राप्त करने के लिए एडिषन में आइटम की वैधता की जांच करने के लिए कुछ वरिष्ठ षिक्षकों से परामर्ष करें ।
स्केल से बाहर की कोषिष करो।
पैमाने को अच्छी तरह से संसोधित किया गया था और स्कूल के उच्च सहायता प्रमुखों और वरिष्ठ षिक्षकों के सुझावों के साथ पुरस्कृत किया गया था। बैंगलोर शहर में याद्वच्छिक स्तर पर चयनित 300 माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों के नमुने के लिए पैमाने को प्रषासित किया गया था। पैमाने के लिए चयनित अंतिम आइटम आइटम कुल सहसंबंध पर बनाये गये मूल्यों के आधार पर आइटम का चयन करके किया गया था। 27 वस्तुओं को इसके महत्व के स्तर 0.05 और 0.01 के स्तर के आधार पर बनाये रखा गया था और 7 आइटम समाप्त हो गये थे क्योंकि वह नहीं थे। 0.05 के स्तर पर भी महत्व ।

स्केल के क्षेत्र
स्कूल प्रषासन के पैमाने में षिक्षक की भागीदारी के क्षेत्रों को विकसित

करते समय किसी को स्कूल प्रषासन के प्रमुख क्षेत्रों (आयाम) के बारे में सोचना होगा। सैद्धांतिक और अनुभवजन्य साहित्य की गहन समीक्षा के बाद निम्नलिखित को स्कूल प्रषासन के प्रमुख क्षेत्रों के रूप में पहचाना गय जिसमें षिक्षकों को भाग लेना चाहिए। वो है

1. Planning

2. Organizing

3. Communication

4. नियंत्रण (बजट और निर्णय सहित)

5. विकास (पर्यवेक्षण भी शामिल हैं)

ये पांच क्षेत्र स्कूल प्रषासन में षिक्षकों की भागीदारी को प्राप्त रूप से कवर करते हैं और पर्याप्त वैचारितक फ्रेम वर्क के अधिकारी होते हैं और इसमें वैधता होती है । इन क्षेत्रों में से प्रत्येक एक संक्षिप्त विवरण सषर्त रूप से नीचे दिया गया है।

1. **प्लानिंग** : – प्लानिंग एक फंक्षन है जो स्कूल प्रषासन में मौलिक हैं जिसमें षिक्षकों को भाग लेना चाहिए इस क्षेत्र में अग्रिम पंक्ति में बिठाने में षिक्षकों की भागीदारी पर आइटम शामिल हैं, क्या किया जाना है, या कैसे किया जाना है और शैक्षणिक वर्ष के लिए स्कूल टाइमटेबल और स्कूल कैलेण्डर तैयार करने के अलावा विशेष गतिविधि के लिए कौन जिम्मेदार होगा।

2. **आर्गनाइजिंग** : – ऑर्गनाइजिंग फंक्षन व प्रक्रिया है जिसके द्वारा इस क्षेत्र के स्कूलों के ोषित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए गतिविधियों को समन्वित किया जा सकता है। जिसमें गतिविधियों और सामग्रियों की खरीद और प्रबंध दोनो को पाठ्यक्रम और अतिरिक्त पाठ्यक्रम क्षेत्र में व्यवस्थित रूप से शामिल किया जाता है।

3. **संचार** : – षिक्षक प्रभावषीलता की सबसे महत्वपूर्ण सुविधाओं में से एक है, जिसके बिना चतुर्थ, विचारों और अनुभवों का निर्वाहन नहीं किया जा सकता है इस क्षेत्र में इस बात से सम्बंधित है कि

षिक्षक कैसे अपने और अपने सहयोगियों, स्कूल के प्रमुख, छात्रों और माता – पिता के बीच अपने विचारों का आदान–प्रदान करता है।

4. **नियंत्रण** – नियंत्रण प्रभावी स्कूल प्रषासन का षुिन्य है। इसमें स्वीकृत योजना के सत्यापन में शामिल है। इस क्षेत्र में शामिल किए गए आइटम, षिक्षण के नवीन तरीकों के चयन, पाठ्यचर्या और गैर–पाठ्यक्रम गतिविधियों के लिए बजट आदि के बारे में निर्णय लेने में षिक्षकों की सभी भागीदारी।

5. **मूल्यांकन** – यह स्कूल प्रषासन का मूल है, मूल्यांकन के बिना, कोई भी उद्देष्य महसूस नहीं किया जा सकता है।

इस क्षेत्र में आइटम छात्रों को उनके माता–पिता के लिए प्रगति की सूचना, शारीरिक सुविधाओं की उपयुक्ता और पर्याप्तता, षिक्षण सामग्री और षिक्षकों द्वारा स्कूल में विद्यार्थियों की स्वास्थ्य स्थिति का मूल्यांकन करने आदि को कवर करते हैं।

आइटम विष्लेषण के माध्यम से अंतिम आइटम चयन के बाद विभिन्न क्षेत्रों के तहत चुने गए 27 आइटम तालिका 1 में प्रस्तुत किए जाते हैं।

चतुर्थ अध्याय

प्रवत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

आंकडों का संकलन

लिंग के अनुसार न्यादर्श का वितरण

विषय वर्ग के अनुसार न्यादर्श का वितरण

बोर्ड के अनुसार न्यादर्श का वितरण

स्नातक व स्नात्कोत्तर के अनुसार न्यादर्श का वितरण

आंकड़ों का संकलन –

	Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
UP	100	50.0	50.0	50.0
CBSE	100	50.0	50.0	100.0
Total	200	100.0	100.0	

प्रस्तुत शोध में यू.पी. बोर्ड के 100 तथा सी.बी.एस.ई. बोर्ड के 100 अध्यापकों को न्यादर्ष के रूप में लिया गया है।

चार्ट संख्या –1 (क)

लिंग के आधार पे निरीक्षण –

Ho लिंग के आधार पर दोनो की वर्गों की योजनाओं में कोई सार्थक अंतर नही है।

Subject		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Planning	Male	122	17.70	5.446	.493	1.496	Not Significance
	Female	78	16.51	5.529	.626		at .05 level

1. लिंग के आधार पर प्रथम निरीक्षण का आधार योजना को बनाया गया है। अर्थात पुरूष व महिला वर्ग किस प्रकार प्रषासन की कार्य शैली को योजना को आधार पर प्रभावित करते हैं।
2. उपरोक्त चार्ट में दिये गये न्यादर्ष के अनुसार हम ये देख सकते हैं कि पुरूष वर्ग (122) महिला वर्ग (78) से षिक्षा के क्षेत्र में अधिक कार्यरत हैं।
3. पुरूष व महिला वर्ग के मध्य कुल संख्या में अधिक भिन्न होने पर भी दोनों का औसत अन्तर निम्न है।
4. प्रस्तुत चार्ट में टी मूल्य 1.496 है जो कि चार्ट मूल्य 1.96 से कम है अर्थात हमारी नल परिकल्पना की पुष्टि होती।
5. महिला व पुरूष वर्ग माध्य मानक विचलन देखने पर ये पाया गया कि महिलायें, पुरूषों की अपेक्षा कार्यों को योजनाबद्ध करके करने में अधिक सक्षम है।
6. चूंकि महिला व पुरूष वर्ग में निरीक्षण के आधार से प्राप्त अन्तर 0.5 से कम है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

उपरोक्त चार्ट के आधार पर हम ये भी कह सकते कि स्कूल प्रषासन के कार्यों को योजना बद्ध रूप से कार्य करने में दोनो ही बराबर के सहयोगी है।

पाठ्यक्रम, अभिभावक मीटिंग, विद्यालय के अध्यापकों की मीटिंग, अतिरिक्त पाठ्यचर्या गतिविधियां आदि को दोनों ही बहुत प्रभावषाली ढ़ंग से करने व करवाने में सक्षम हैं।

चार्ट संख्या –1 (ख)

लिंग के आधार पे संगठनों में अंतर

Ho लिंग के आधार पे संगठनों में कोई भी सार्थक अंतर नही है।

Subject		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Organizing	Male	122	20.34	5.574	.505	3.844	Significance at .05 level
	Female	78	17.51	4.712	.534		

1. उपरोक्त चार्ट में गणना करने पर प्राप्त टी मूल्य 3.844 व चार्ट मूल्य 1.96 से अधिक है जिसके कारण शून्य परिकल्पना को स्वीकार नहीं किया जा सकता है।
2. उपरोक्त चार्ट में महिला वर्ग का औसत व माध्य मानक विचलन दोनो ही पुरूष वर्ग के औसत व माध्य मानक विचलन से कम हैं, अतः हम यह कह सकते हैं कि पुरूष वर्ग अपने कार्य को अधिक संगठित तरीके से करता है।
3. दोनो वर्गों की योजना प्रणाली में अंतर न होने पर भी उनको संगठित करने में पर्याप्त अंतर देखा जा सकता है।
4. विषेषता पुरूष वर्ग का कार्य, संगठन क्षमता, विद्यालय प्रबंध, अभिभावक मीटिंग, विद्यालय स्टाफ मीटिंग, अतरिक्त पाठचर्या आदि महिला वर्ग की अपेक्षा अधिक संगठित व संयोजित है।

चार्ट संख्या – 1 (ग)

संचार के आधार पे अंतर –

Ho पुरूष एवं महिला वर्ग में संचार के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं हैं।

Subject		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Communication	Male	122	20.56	6.223	.563	3.318	Significance at .05
	Female	78	17.74	5.598	.634		level

1. उपरोक्त चार्ट में पुरूषों एवं महिला वर्ग के मध्य गणना की गई टी मूल्य 3.318 दी गई मूल्यांकन संख्या 1.96 से अधिक है जिसका अर्थ यह है कि पुरूष एवं महिला वर्ग में वार्ता का तरीका अलग – अलग है जिसके कारण हमारी शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।
2. औसत स्कोर और माध्य मानक विचलन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि पुरूष वर्ग की वार्ता महिला वर्ग से अधिक स्पष्ट होती है।
3. पुरूष अपनी बात को बच्चों अभिभावकों एवं मैनेज़र के सामने रखने में अधिक सक्षम होते हैं ।
4. वार्ता में पारदर्षिता भी उनकी इसी भिन्नता को स्वाभाविक रूप से दर्षाता है।

चार्ट संख्या – 1 (घ)

नियंत्रण के आधार पर महिला व पुरूष वर्ग का अंतर –

Subject		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Controlling	Male	122	18.11	5.593	.506	1.597	Not Significance at
	Female	78	16.92	4.778	.541		.05 level

Ho लिंग के आधार पर नियंत्रण में दोनो ही वर्ग में कोई भी सार्थक अंतर नही है।

1. उपरोक्त चार्ट में दिया गया भू0 1.96 टी मू0 1.597 से कम है अतः यह गणना ये दर्षाता है कि महिला एवं पुरूष वर्ग दोनों ही नियंत्रण में समानता रखते हैं अतः हमारी नल परिकल्पना को स्वीकृति होती है।
2. चार्ट के अनुसार महिला वर्ग का औसत स्कोर पुरूष वर्ग से कम है परन्तु उनका माध्य मानक विचलन ज्यादा है, इनमें भिन्नता होते हुए भी टी – मूल्यांकन और परिणामों में कोई अन्तर नही है।

3. विद्यार्थियों की पढ़ाई, उनकी अतिरिक्त पाठ्यकार्या, पूर्ण वर्ष की परफार्मेस अनुषासन आदि पर दोनों ही श्रेणियों के अध्यापक बराबर नियंत्रण रखते हैं।
4. अध्यापकों का आपस में भी प्रभावषाली नियंत्रण रहता है जिसके कारण भी दोनों में असमानता नहीं देखने को मिलती है।

चार्ट संख्या – 1 (ड़)

मूल्यांकन के आधार पर अंतर –

Ho. लिंग के आधार पर मूल्यांकन प्रक्रिया में कोई भी सार्थक अंतर नहीं हैं।

Subject		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Evaluation	Male	122	18.07	9.308	.843	1.008	Not Significance at
	Female	78	16.46	11.916	1.349		.05 level

1. उपरोक्त चार्ट में गणना की गई टी–वैल्यू 1.008 जोकि दि गई df मूल्य 1.96 से कम है जिसके कारण हमारी नल परिकल्पना स्वीकृत होती है।
2. चार्ट के अनुसार महिला वर्ग का औसत स्कोर पुरूष वर्ग से कम है परन्तु उनका माध्य मानक विचलन अधिक है दोनो में भिन्नता होते हुए भी दोनों का टी – मूल्य और परिणाम दोनों में भिन्नता नहीं है।
3. चूंकि दोनो ही वर्ग (स्त्री व पुरूष) एक ही संस्था मे कार्यरत है जिसके कारण दोनों की कार्य प्रणाली को प्रबन्धक द्वारा ही संचालित किया जाता है इस कारण से दोनो में भिन्नता होने की कम सम्भावना है।

चार्ट संख्या 2

विषयों के आधार पर निरीक्षण –

विषयों को दो वर्गो में विभाजित किया गया है :

1. विज्ञान वर्ग 2. कला वर्ग

योजना के आधार पर –

Ho. योजना के आधार पें विज्ञान व कला वर्ग के अध्यापकों के मध्य काई अन्तर नहीं है।

चार्ट संख्या 2 (क)

	Subject	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Planning	Art	145	16.95	5.456	.453	1.194	Not Significance at
	Science	55	18.00	5.578	.752		.05 level

1. कला एवं विज्ञान का कुल गुणांक 145 व 55 है एवं टी–मूल्य 1.194 है जोकि df की चार्ट मूल्य 1.96 से कम है इसलिए हम यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि योजना के आधार पर दोनो वर्गों के मध्य कोई अन्तर नहीं है ।
2. विज्ञान वर्ग के अध्यापकों का कुल गुणांक काफी कम होने के बाद भी इनकी योजना क्षमता कला वर्ग से बेहतर कही जा सकती है परन्तु स्कूल प्रबंधन के स्तर पर यह दोनों की वर्ग समान स्तर पर कार्य करते हैं।
3. इनके मध्य विषय भिन्नता होते हुए भी इनका सामान रूप से काम करना यह दर्षाता है की स्कूल प्रषासन के प्रबंधन उद्देष्यों का यह लोग अनुसरण करते हैं और उसी के आधार पर यह अपनी कार्यप्रणाली को योजनाबद्ध करते हैं।

चार्ट संख्या – 2 (ख)

संगठन के आधार पर –

Ho.कला व विज्ञान वर्ग के अध्यापकों में कोई सार्थक अन्तर नही है।

	Subject	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Organizing	Art	145	19.33	5.384	.447	.400	Not Significance at
	Science	55	18.98	5.559	.750		.05 level

1. उपरोक्त चार्ट के आधार पर हम ये निष्कर्ष निकालते है कि संगठन के आधार पर भी विभिन्न विषयों के अध्यापकों में कोई भिन्नता नहीं है क्योकि उपरोक्त चार्ट में दी गई टी–मूल्य की मूल्यांकन संख्या 1.96 से कम है।
2. भिन्न विषय वर्गों में कला संकाय में की संगठन प्रणाली विज्ञान वर्ग से बेहतर और अलग है, इसका आधार हम ये मान सकते है कि – कला संकाय ये तकनीकों का अभाव होता है और विषयों को समझने का पक्ष कलात्मक होता है।
3. तकनीकों में अलगाव होने के कारण दोनो संगठनों में किसी भी प्रकार का अन्तर नहीं है।

चार्ट संख्या – 2 (ग)

संचार के आधार पर नलपरीकल्पना की पुष्टि होती है।

Subject	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Communication Art	145	19.43	6.114	.508	.120	Not Significance at
Science	55	19.55	6.224	.839		.05 level

1. उपरोक्त चार्ट के आधार पर हम ये निष्कर्ष निकालते है कि संचार के आधार पर भी भिन्न विषयों के अध्यापकों में कोंई भिन्नता नहीं है क्योंकि उपरोक्त चार्ट दी गई टी–मूल्य की मूल्यांकन संख्या 1.96 से के कम है।
2. संचार माध्यम का उपयुक्त उपयोग करते हुए दोनों ही वर्गों के अध्यापक प्रबंधन की सभी नीतियों का सही ढ़ंग से संचालन करते है।
3. वर्गों में भिन्नता न होने के कारण अभिभावक मीटिंग, प्रधानाचार्य मीटिंग, बच्चों से वार्ता आदि के सरलता पूर्वक संचालित किया जाता है।

चार्ट संख्या – 2 (घ)

नियंत्रण के आधार पे प्रशासन व्यस्थाओं में अंतर –

Ho.कला व विज्ञान वर्ग में नियंत्रण के आधार पर कोई विषेष अन्तर नहीं है।

Subject		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Controlling	Art	145	17.66	5.215	.433	.042	Not Significance at
	Science	55	17.62	5.559	.755		.05 level

1. उपरोक्त चार्ट के आधार पर हम ये निष्कर्ष निकालते हैं कि नियंत्रण के आधार पर भी कोई भिन्नता नहीं है क्योंकि उपरोक्त चार्ट में दी गई टी–मूल्य की मूल्यांकन संख्या 1.96 से कम है।
2. दोनो वर्गो के मध्य का औसतन अंक एवं माध्य मानक विचलन निम्न है, अर्थात दोनो ही वर्ग अपने – अपने तरीकों में भिन्नता रखते हुए भी विद्यार्थियों एवम् प्रषासन के मध्य संतुलन नियंत्रण पाया जाता है।
3. दोनों के मध्य भिन्नता न होने का एक कारण यह भी हो सकता है, कि दोनों की वर्ग प्रषासन की ही नीतियों का पालन करते अतः परिणाम निष्चित होता है।

चार्ट संख्या – 2 (ड़)

मूल्यांकन के आधार पर प्रशासन व्यवस्था में अंतर –

Ho. H0 मूल्यांकन के आधार पे दोनों ही वर्गों में सार्थक अन्तर है।

Subject		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Evaluation	Art	145	18.36	11.607	.964	2.728	Significance at .05
	Science	55	15.02	5.603	.755		level

गणना की गई टी–मूल्य 2.728 है जोकि चार्ट मूल्य 2.728 है जोकि चार्ट मू. 1.96 से आर्थक है, अर्थात दोनो विषय वर्गों के मध्य मूल्यांकन के आधार पर भिन्नता है।

1. चूंकि मूल्यांकन का शाब्दिक अर्थ अंतिम परिणाम को निकालना व समझाना होता है इसी वज़ह से दोनो वर्गों के मध्य भिन्नता होना स्वाभाविक है क्योंकि दोनो वर्गों का विषयों की विषय वस्तु अलग अलग होती है इनको समझने के आधार अलग होते हैं इसीलिए इनका मूल्यांकन भी भिन्न होता है।

4. दोनो वर्गों के अध्यापकों शैक्षिक स्तर अलग – अलग होने की वज़ह से भी मूल्यांकन में भिन्नता पाई जाती है।

चार्ट संख्या – 3 (क)

यू0 पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के आधार –

Ho. योजना के आधार पर यू0 पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के अध्यापकों में कोई अन्तर नही है।

Subject		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Planning	U.P.	100	19.68	5.505	.550	6.994	Significance at .05 level
	C.B.S.E.	100	14.80	4.288	.429		

1. दोनो माध्यमों के मध्य अध्यापकों का औसतन स्कोर, माध्य मानक विचलन भिन्न हैं, तथा इसकी टी–मूल्य भी 6.99 दी गई मूल्य 1.96 से अधिक है जिसके कारण हम ये नल परिकल्पना को स्वीकार्य नही करती है।
2. योजना के आधार पर दोनो में भिन्नता होने का मुख्य कारण सम्भवतः ये हो सकता है कि दोनो माध्यमों का संचालन अलग वर्गो एवं प्रबन्धकों के द्वारा संचालन होता है।
3. सी0बी0एस0ई0 बोर्ड में बनाई जाने वाली योजना नई तकनीकों को लेकर आगे बढ़ने की होती किन्तु उपरोक्त चार्ट में हम देखते हैं कि यू0पी0 बोर्ड के अध्यापक ऐसी किसी भी योजना को क्रियावित नहीं करते हैं।

चार्ट संख्या – 3 (ख)

बोर्ड के आधार पे संगठनों में अंतर–

Ho.संगठन के आधार पर यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड में कोई सार्थक अंतर नही है ।

Subject		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Organizing	U.P.	100	22.77	4.015	.401	12.156	Significance at .05
	C.B.S.E.	100	15.70	4.208	.421		level

1. यू0पी0 बोर्ड के अध्यापक व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के अध्यापकों का औसतन स्कोर व माध्य मानक विचलन भिन्न है तथा स्कोर टी मूल्य 1.96 से अधिक है जिसके कारण हमारी नलपरिकल्पना स्वीकार नहीं होती है।
2. दोनो ही बोर्डों को संगठन प्रणाली में पर्याप्त अंतर होता है जिसके कारण भी इनकी कार्य प्रणाली अलग अलग होती है।
3. यू0पी0 बोर्ड के षिक्षक सिर्फ एक राज्य तक ही सीमित रहते हैं जबकि सी0बी0एस0ई0 बोर्ड एक ही पैर्टन पर कार्य करता है।

चार्ट संख्या – 3 (ग)

बोर्ड के आधार पर संचार में अंतर –

Ho. संचार के आधार पर दोनो ही बोर्डों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

Subject		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Communication	U.P.	100	22.99	5.636	.564	9.951	Significance at .05
	C.B.S.E.	100	15.93	4.309	.431		level

1. दोनो माध्यमों के मध्य अध्यापकों का औसतन स्कोर व माध्य मानक विचलन भिन्न है तथा इसका टी मूल्य 9.95 दी गई है जोकि 1.96 से अधिक है अतः नलपरिकल्पना को स्वीकार्य नहीं किया जा सकता है।
2. यू0पी0 बोर्ड के अध्यापक अपने विद्यार्थियों, अपने सहयोगियों को प्रबंधकों के प्रति कम पारदर्षिता को दर्षाता है।
3. सी0बी0एस0ई0 बोर्ड में लोगों तक अपनी बात पहुंचाने, अपनी नीतियों को बताने आदि में पारदर्षिता रखते हैं। जिसका यू.पी. बोर्ड में अभाव है।

चार्ट संख्या – 3 (घ)

बोर्ड के आधार पर नियंत्रण में अंतर –

Ho.नियंत्रण के आधार पर दोनों ही बोर्ड के अध्यापकों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नही है।

Subject		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Controlling	U.P.	100	20.61	4.888	.489	9.507	Significance at .05 level
	C.B.S.E.	100	14.68	3.874	.387		

1. दोनों ही माध्यमों के अध्यापकों का औसतन स्कोर व माध्य मानक विचलन भिन्न है तथा इसका ही टी मूल्य 9.507 है जाकि 1.96 से अधिक है जिसके कारण नलपरिकल्पना स्वीकार्य नही किया जा सकता ।
2. नियंत्रण के आधार पर यूपी बोर्ड का औसतन मूल्य सी0बी0एस0ई0 मूल्य से ज्यादा है अर्थात यहां अध्यापकों का विद्यार्थियों पर, पाठ्यक्रम पर, प्रबंधन पर, तथा अभिभावकों पर औसतन नियंत्रण ज्यादा है ।
3. यू0पी0 बोर्ड का नियंत्रण ज्यादा होने का मूख्य कारण यह भी हो सकता है कि यहां के अध्यापकों का चयन निष्चित तौर पर होता है जिससे जॉब सिक्योरिटी अधिक होती है।

चार्ट संख्या – 3 (ड़)

बोर्ड के आधार पर मूल्यांकन पद्धति में अंतर –

Ho. मूल्यांकन के आधार पर यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के अध्यापकों में कोई सार्थक अंतर नही है।

Subject		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Evaluation	U.P.	100	19.94	4.658	.466	3.493	Significance at .05 level
	C.B.S.E.	100	14.94	13.537	1.354		

1. दोनो ही माध्यमों के अध्यापकों का औसतन स्कोर व माध्य मानक विचलन भिन्न है तथा इसका टी मूल्य 3.493 है जोकि 1.96 से अधिक

है जिसके कारण नल परिकल्पना को स्वीकार्य नहीं किया जा सकता है।

2. अपेक्षाकृत यू0पी0 बोर्ड सी0बी0एस0ई0 बोर्ड को मूल्यांकन प्रकिया अधिक बेहतर व नई है।
3. इसका मुख्य कारण सम्भव यह है कि सी0बी0एस0ई0 बोर्ड तकनीकी रूप से नवीन है। इसका मूल्यांकन का माध्यम भी नयी तकनीकों पर आधारित होता है ।
4. क्योकिं पूरे भारत में ये एक ही पैटर्न को चलायमान रखते है जिसकी वज़ह से यू0पी0 बोर्ड से अधिक बेहतर ढ़ंग से कार्य कर पाते हैं।

चार्ट संख्या – 4 (क)

योजना के आधार स्नातक व स्नात्कोत्तर अध्यापकों में अंतर–

योजना के आधार पर दोनो ही वर्गों में कोई विषेष अंतर नहीं प्राप्त होता है।

Subject		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Planning	PG	124	17.56	5.430	.488	1.033	Not Significance at .05 level
	UG	76	16.72	5.599	.642		

1. उपरोक्त चार्ट में टी–मूल्य 1.033 है जोकि 1.96 से कम है अतः इस कारण से हमारी नलपरियोजना स्वीकार्य नहीं होती है।
2. क्योंकि दोनो ही बोर्ड में अध्यापक दोनों श्रेणी के है (स्नातक व स्नात्कोत्तर) अतः दोनों की कार्य प्रणाली अलग–अलग किन्तु प्रषासनिक तौर पर दोनों की ही योजनाओं में कोई विषेष अंतर नहीं है।
3. कार्य योजना, पाठ्यक्रम को निर्देषित करना समय–सारणी, अतिरिक्त पाठ्यचर्या आदि को प्रभावषाली ढ़ंग से संचालित करते हैं।
4. किसी कार्य को करने से पूर्व कि गई तैयारी, स्टॉफ को रखने के लिये किया कार्य तथा सामाजिक कार्य आदि को विद्यालय अध्यापकों के द्वारा भली प्रकार किया जाता है।

चार्ट संख्या – 4 (ख)

स्नातक व स्नात्कोत्तर के आधार पर संगठन में अंतर–

Ho. संगठन के आधार पर स्नातक व स्नात्कोत्तर अध्यापकों में कोई भी सार्थक अंतर नही हैं।

Subject		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Organizing	PG	124	19.93	5.183	.465	2.286	Significance at .05
	UG	76	18.11	5.642	.647		level

1. उपरोक्त दिये गये चार्ट में अध्यापकों की क्षमता का आकलन संगठन के उद्देष्य से किया गया है।
2. स्नातक व स्नात्कोत्तर अध्यापकों की कुल संख्या 124 व 76 है जिसका टी–मूल्य 2.286 जोकि 1.96 से ज्यादा है इस आधार पर नल परिकल्पना को स्वीकार्य नहीं किया जा सकता है।
3. अध्यापकों को शैक्षिक स्तर भिन्न – भिन्न होने के कारण भी यह भिन्नता देखी जा सकती है।
4. देखा जा सकता है कि स्नातकोत्तर के अध्यापक की स्नातक की अपेक्षा अधिक सक्रिय व क्षमतावान होते हैं विद्यालय प्रषासन में।
5. स्नात्कोत्तर के अध्यापक कार्यों को संगठित करने में जैसे मीटिंग, पाठ्यक्रम अतिरिक्त पाठ्चर्या आदि को कराने में अधिक सक्षम होते हैं।

चार्ट संख्या– 4 (ग)

संचार के आधार पर–

Ho. संचार के आधार पर स्नातक व स्नात्कोत्तर के अध्यापकों में कोई भी सार्थक अन्तर नही है।

Subject		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Communication	PG	124	19.73	6.282	.564	.795	Not Significance at
	UG	76	19.03	5.886	.675		.05 level

1. उपरोक्त चार्ट में टी–मूल्य 0.795 है जोकि 1.96 से कम है हमें नल परिकल्पना को स्वीकृत करने के लिए निर्देषित करती है।
2. संचार के आधार पर दोनो वर्गों के अध्यापक बराबर से कार्य करते हैं।
3. अध्यापकों द्वारा नीतियों का संचार विद्यार्थियों को तथा उनके माता पिता को अपने से नीचे कार्य करने वाले व्यक्तियों को बहुत ही प्रभावषाली ढ़ंग से करते हैं।
4. अध्यापकों के वार्ता के तरीके से हम ये जान सकते हैं कि प्रषासन में तथा उनके कार्य करने माध्यमों में कितनी अधिक पारदर्षिता है।

चार्ट संख्या – 4 (घ)

नियंत्रण के आधार पे स्तानक और स्नात्कोत्तर अध्यापकों में अंतर –

Ho. नियंत्रण के आधार पर स्नातक व स्नात्कोत्तर के अध्यापकों में कोई सार्थक अंतर नही है।

Subject		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Controlling	PG	124	17.88	5.289	.475	.793	Not Significance at .05 level
	UG	76	17.26	5.335	.614		

1. उपरोक्त चार्ट में टी – मूल्य .793 है जोकि 1.96 से कम है अतः हमारी नल परिकल्पना स्वीकृत होती है।
2. दोनो ही वर्गों के अध्यापकों का अपने विद्यार्थियों पे बराबर नियंत्रण है ।
3. अध्यापकों का अपने स्टाफ पर व अन्य पाठ्यचर्या पे तथा अपने विद्यार्थियों पे अत्यंत ही प्रभावषाली नियंत्रण है।
4. सुचना का स्थानतंरण प्रथम बिन्दु से अंतिम बिन्दु तक प्रभावषाली है क्योंकि अध्यापकों का नियंत्रण अत्यंत ही प्रभावपूर्ण है।

स्नातक व स्नात्कोत्तर अध्यापाकों का वर्गीकरण मूल्यांकन के आधार पे

Ho. स्नातक व स्नात्कोत्तर के अध्यापकों में मूल्यांकन के आधार पर कोई भी सार्थक अंतर नहीं है।

Subject	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	T=Value df=198	Significance
Evaluation PG	124	18.26	12.381	1.112	1.666	Not Significance at
UG	76	16.11	5.735	.658		.05 level

1. उपरोक्त चार्ट में टी मूल्य 1.666 है जोकि 1.96 से कम है अतः हमारी नलपरिकल्पना स्वीकृत नहीं होती है।
2. दोनों ही वर्गों का मूल्यांकन प्रक्रिया एक जैसी है अर्थात मूल्यांकन प्रक्रिया पर स्नातक व स्नात्कोत्तर षिक्षकों का कोई विषेष प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. विद्यार्थियों का अन्तिम परिणाम, अत्याधिक प्रभावपूर्ण तरीके से तैयार किया जाता है।
4. स्नातक व स्नात्कोत्तर अध्यापकों की कार्यप्रणाली तथा विद्यालय के उद्देष्य भी एक समान हैं, अतः मूल्यांकन का प्रषासन व्यवस्था में कोई महत्वपूर्ण विषेष प्रभाव नहीं पड़ता है।

‘

पंचम अध्याय

अध्ययन के परिणाम, शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

निष्कर्ष

अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ

भावी अध्ययन के लिए सुझाव

पंचम अध्याय –

अध्ययन के परिणाम शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव –

कोई भी अनुसंधान कार्य तब तक सफल एवं उपयोगी नहीं हो सकता जब तक कि उसे किसी उद्देष्य अथवा निष्कर्ष की प्राप्ति न हो। वह निष्कर्ष अनुसंधान परिणामों की व्याख्या के पष्चात प्राप्त होता है। प्रस्तुत शोध का निष्कर्ष निकालते समय शोधकर्ता ने एक बार पुनः व्यापक रूप में प्रवत्तों एंव विष्लेषण के स्वरूप का अवलोकन किया।

निष्कर्ष–

1. माध्यमिक स्तर के महिला व पुरूष वर्ग के लिंग के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि लिंग के आधार पर दोनों का प्रषासनिक योगदान में कोई अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के महिला व पुरूष वर्ग के अध्यापकों में संगठन के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया है। इसका अर्थ यह है कि महिला की अपेक्षा पुरूष वर्ग किसी कार्य को अधिक संगठित तरीके से कर सकते हैं ।
3. माध्यमिक स्तर के अध्यापकों में संचार के आधार पर प्रषासनिक कार्यों में किये जाने वाले योगदान में सार्थक अंतर देखने को मिलता है अतः हम ये कह सकते हैं कि विद्यालय में लिंग के आधार पे संचार में लोगों से वार्ता करने में अंतर है।
4. माध्यमिक स्तर के महिला व पुरूष वर्ग के अध्यापकों में प्रषासनिक नियंत्रण मे लिंग के आधार पे कोई भी अंतर नही है । दोनो ही वर्ग के लोग विद्यार्थियों पर अपना नियंत्रण भलि प्रकार बनाने में सक्षम हैं।
5. माध्यमिक स्तर के महिला व पुरूष वर्ग के आधार पे प्रषासन व्यवस्था में किये जाने वाले योगदान लगभग एक समान है।
6. माध्यमिक स्तर के अध्यापकों मे विषयों के आधार पर प्रषासन के कार्यों में किये जाने वाले योगदान में कोई भी सार्थक अंतर नहीं है। इसका अर्थ है कि माध्यमिक स्तर के अध्यापक प्रषासन योगदान के चारों क्षेत्र में (योजना, संगठन, संचार, नियंत्रण) में एक समान है।
7. माध्यमिक स्तर के अध्यापकों में विषयों के आधार पर प्रषनिक योगदान में सार्थक अंतर है। अतः इसका यह अर्थ है कि प्रषनिक योगदान में मूल्यांकन के आधार पर दोनो भिन्न–2 होते है।

8. माध्यमिक स्तर के अध्यापकों में बोर्ड के आधार पे प्रषनिक योगदान में सार्थक अंतर देखने को मिलता है। अतः हम ये कह सकते हैं कि यू0 पी0 बोर्ड के माध्यमिक स्तर के अध्यापक तथा सी.बी.एस.ई. बोर्ड के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों में पांच क्षेत्रों (योजना, संगठन, संचार, नियंत्रण तथा मूल्यांकन) में भिन्न – 2 होते हैं।
9. माध्यमिक स्तर के अध्यापकों में उनके षिक्षा के आधार (स्नातक व स्नात्कोत्तर) प्रषनिक योगदान में कोई सार्थक भिन्नता देखने को नहीं मिलती हैं अतः हम यह नहीं सकते है कि दोनो ही बोर्ड के अध्यापक निम्न क्षेंत्रो (योजन, संचार, नियंत्रण, मूल्यांकन) में प्रषासन में एक समान योगदान देते हैं।
10. माध्यमिक स्तर के अध्यापकों में उनकी षिक्षा के आधार पर प्रषासन में किये जाने वाले योगदान में सार्थक अंतर देखने के मिलता है अतः यह कहा जा सकता है कि संगठन के आधार पर दोनो भिन्न – 2 है।

अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ –

कोई भी शोध कार्य तब पूर्ण नहीं माना जा सकता है जब तक कि उसका कोई शैक्षिक निहितार्थ न हो । अतः प्रस्तुत शोध कार्य को करते समय शोधकर्ता ने इस तथ्य की ओर ध्यान दिया है कि इस शोध कार्य से सम्पूर्ण विद्यालय प्रषासन लभान्वित हो सके।

प्रस्तुत शोधकार्य की उपयोगिता को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है –

1. इस अध्ययन के द्वारा विद्यालय प्रबंधन व प्रषासन के लोग अध्यापक के प्रषासन के लोग अध्यापक के प्रषासनिक योगदान को भली प्रकार समझने तथ उनके योगदान को सही दिषा प्रदान करने में सक्षम होगें।
2. प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा विद्यालय प्रषासन में लगे हुए लोग उन पक्षों पर अधिक ध्यान देने में सक्षम हो पायेगें जिन पक्षों पर अध्यापक वर्ग योगदान नहीं दे पा रहा है या कम दें पा रहा है।
3. यू.पी. बोर्ड के प्रषासन को और बेहतर तथा कमजोर पक्षों पर कार्य करने में सरलता होगी।
4. प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा हम प्रत्येक अध्यापक के प्रषासनिक योगदान से अपनी षिक्षा प्रणालियों के अधिक बेहतर बना पायेगे तथा अपने व सहयोगी अध्यापकों के मध्य पारदर्षिता ला पायेंगे।

5. प्रस्तुत शोध कार्य विद्यालय हित में बनाई जाने वाली योजनाओं में परिवर्तन करने तथा अपने अध्यापकों को एक साथ संगठित करके कार्य करने व करवाने अधिक प्रभावषाली हो पायेगा।
6. विद्यालय प्रषासन अपने अध्यापकों का मूल्यांकन भली प्रकार से करने तथा उनमें प्रभावी रूप में परिवर्तन लानें में सक्षम होगी । जिससे वह अपने विद्यार्थियों को बेहतर तरह से षिक्षा उपलब्ध करवा पायेगा।
7. अपने विद्यार्थियों को वैष्विक स्तरीय षिक्षा प्रदान करने में सक्षम हो पायेगें।

भावी अध्ययन के लिए सुझाव –

समय एवं लाकडाउन के कारण प्रस्तुत शोध कार्य के क्षेत्र को सीमित कर दिया गया है । अतः इस आधार पर शोधकर्ता द्वारा इस विषय पर भावीषोध कार्य करने के लिए निम्न सुझाव दिये गये है –

1. भावी शोध उच्च माध्यमिक स्तर पर किया जा सकता है।
2. लखनऊ के अतिरिक्त अन्य नगरों में यह शोध का सम्पन्न किया जा सकती है।
3. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श की संख्या 200 है भविष्य में न्यादर्ष की संख्या को बढ़ाया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोध केवल दो बोर्ड के मध्य यू0पी0 व सी0बी0एस0ई0 के मध्य किया गया है, भावी शोधकर्ता इसमें आई0 सी0 एस0 ई0 बोर्ड भी शामिल कर सकता है।
5. प्रस्तुत शोध निम्न पांच तत्वों में आधारित है, भावी शोधकर्ता अन्य दूसरे तत्वों को भी शामिल कर सकता हैं।
6. भावी शोधकर्ता कुछ पक्षों जैसे संचार माध्यमों तथा बोर्ड का सही प्रकार से अध्ययन करके अपने शोध को केवल इन दो पक्षों पर सीमित कर सकते हैं तथा यू0 पी0 बोर्ड के अध्यापकों और बेहतर ढ़ंग से कार्य करने में मदद कर सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- ''भारत में शैक्षिक प्रषासन'' न्यू षिुन्यली

Bhagabhaji and et. Al (1984)

2. '' एन इन्ट्रोडेक्षन आफ स्कूल एडमिनस्ट्रेषन

चेस्टर नोट एम (1943)

3. '' ए स्टडी आफ सेकेण्डरी स्कूल प्रिंसीपल एडमिनस्ट्रेषन विहेवियर इन रिलेषन टु स्कूल क्लाइमेंट '' द प्रोग्रेस आफ एडुकेषन 65.

दास, एम (1990)

4. '' कैरेक्टर स्टिका आफ टीचर्स '' अमेरिकन कांउसिल

डेविड ए राम (1960)

5. '' स्कूल एडमिनस्ट्रेषन एण्ड सुपरविजन ''

मंहाती–2007 (दीप पब्लिकेषन)

6. '' मोडन मैर्थड इन सेकेण्डरी एजुकेषन ''

रिवाइजड ऐडिशन, न्यूयार्क

7. '' मोडन एडमिनषट्रेषन आफ सेकेण्डरी स्कूल ''
ब्लइिस डेल पब्लिषिंग कम्पनी, 963 – 64

हर, पी. आर. डुगलस

8. '' रिसर्च इन एजुकेषन '' न्यू षिुन्यली

जान, डब्लू, बेस्ट

(1970)

9. '' स्टडी आफ ए एडमिनिषट्रेषन विहेवियर आफ हाई स्कूल प्रिंसिपल इन सेन्ट्रल गुजरात '' 111 सर्वे आफ रिसर्च इन एजूकेषन ए.बी.एन. एम.बी. बुच न्यू षिुन्यली एन.सी.ई.आर.टी. 1987.

माहंत जी. वी (1979)

10. '' एडमिनिषट्रेषन बिहेवियर आफ हेडमास्टर सम कोरिलेटेड एण्ड बैकग्राउण्ड फैक्टर '' सेकेण्डरी सर्वे इन एजुकेषन रिसर्च न्यू षिुन्यली एन.सी.ई.आर.टी.

पाडॉ, एस. एन.

(1975)

11. '' ए स्टडी आफ एडमिनिषट्रटिव स्टाइल एडमिनिषट्रिव इफेक्टिवनेस एण्ड सम अंडर आर्गनाईजेषन कैरेक्टर स्टिक्स आफ द स्कूलस एट–2 लेबल ''

जनरल आफ एजुकेषन प्लानिंग एण्ड एडमिनिषट्रेसन।

शुक्ला, अनीता (1980)

12. '' इफेक्टिव स्कूल एडमिनिषट्रेसन '' पारकर पब्लिषिंग कम्पनी

रिचर्ड व्उलेस डी. (1968)

13. विद्यालय प्रबंधन एवं स्वच्छता

(डा0 मणिजोषी । पंकज कुमार तिवारी)

14. विद्यालय प्रषासन एवं प्रबन्ध स्टरलिंग पब्लिषर प्रा0 लि0

(एस0 के0 कोच्चर)

15. विद्यालयी षिक्षा में प्रषासन व प्रबंध

(राजीव सिंह त्यागी)

16. शैक्षिक प्रषासन एवं विद्यालयी प्रबंधन

(एस0 पी0 सुखिया । के0 पी0 माधुर)

17. शैक्षिक प्रषासन प्रबन्ध एवं पर्यावरण षिक्षा

(डा0 गजेन्द्र सिंह तोमर)

18. विद्यालय में अध्यापक की भूमिका : प्रबंध एवं प्रषासन

ओ. रियली. कॉम